ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

पौष २०८२ जनवरी २०२६

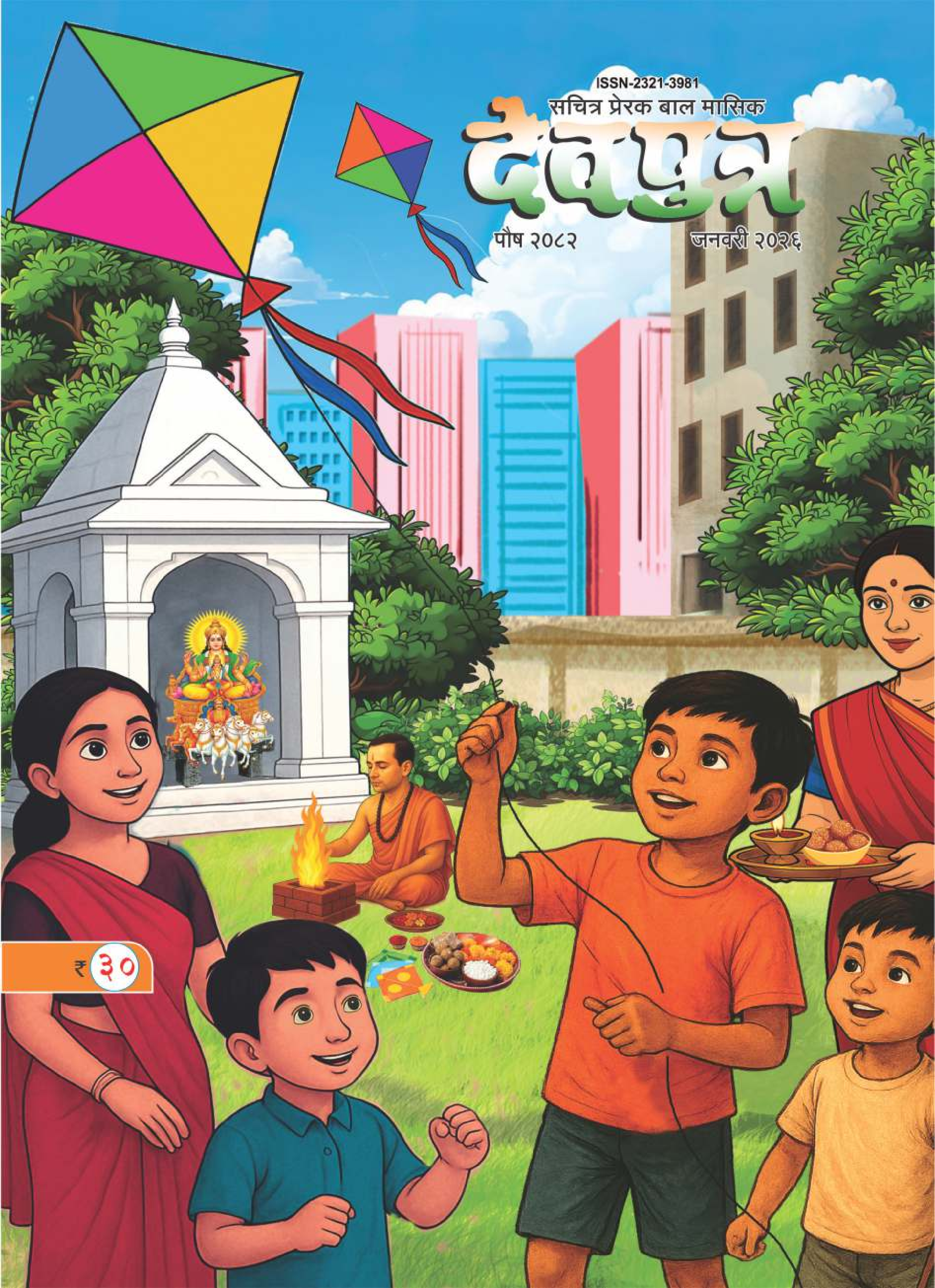

₹ ३०

वरिष्ठों ने दुलराया देवपुत्र

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाहजी ने की संघ परिचय अंक की प्रशंसा

दिनांक ३० नवम्बर २०२५ इन्दौर। संघ कार्यालय सुदर्शन भवन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह जी श्री. दत्तात्रेय होसबोले ने देश की सर्वाधिक प्रसार संख्या वाली सचित्र प्रेरक बाल मासिक पत्रिका 'देवपुत्र' के संघ शताब्दी प्रसंग पर प्रकाशित विशेषांक 'संघ परिचय अंक' का अवलोकन किया और इसकी सराहना करते हुए शुभकामनाएँ दीं। यह अंक 'देवपुत्र' के संचालक न्यास 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के अध्यक्ष डॉ. कमल किशोर चितलांग्या, प्रबंध न्यासी सीए. राकेश भावसार, संपादक गोपाल माहेश्वरी और प्रबंध संपादक नारायण चौहान ने भेंट किया। क्षेत्र कार्यवाह श्री. अशोक जी अग्रवाल, प्रांत संघचालक डॉ. प्रकाश जी शास्त्री, प्रांत कार्यवाह श्री. विनीत जी नवाथे सहित कई प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे।

रक्षामंत्री जी को 'देवपुत्र' भेंट

१६ अक्टूबर२०२५ नासिक। 'देवपुत्र' के प्रबंध न्यासी सीए. राकेश भावसार ने भारत के रक्षामंत्री मा. श्री. राजनाथ सिंह जी को 'देवपुत्र' का गौरवशाली 'अवधेश अंक' भेंट किया।

ज्ञातव्य है कि **श्री. भावसार हिन्दुस्थान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के स्वतंत्र** निदेशक के रूप में एक बैठक के अवसर पर मा. श्री. राजनाथसिंह जी के साथ थे।

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

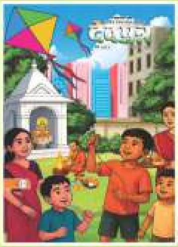

पौष	२०८२	वर्ष	४६
जनवरी	२०२६	अंक	७

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)
कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

जनवरी आती है तो स्वामी विवेकानंद और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का स्मरण होता ही है। कहीं न कहीं, किसी आयोजन में एक अधिकृत और परम ओजस्विनी वाणी से इन महापुरुषों पर आत्मा तक उतर जाने वाले व्याख्यान सुनते रहने के कई अवसर मिले। किन्तु कैसा अ-भाग्य है कि वह शिरा-शिरा में ओज फूँकती गुरु गंभीर वाणी अब चिर मौन है वह वाणी थी देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना की। एक वर्ष बीत गया उनको देवलोक प्रस्थान किए।

कैसी अद्‌भुत लेखनी थी जो लिखने बैठती तो बगैर काट छाँट के पृष्ठ के पृष्ठ भरती हुई विषय सम्पूर्ण करके ही रुकती थी और वक्तृत्व प्रतिभा ऐसी कि सैकड़ों, हजारों श्रोताओं का मन्त्रमुग्ध होना अनिवार्य सा बन जाता था। श्रोता बच्चे हों, युवा हों, प्रबुद्ध जन हो या संत समाज किसी ध्वनि प्रसारक यंत्र की भी आवश्यकता न लगे ऐसी सशक्त, सुस्पष्ट, अस्खलित वाणी के धनी थे वे। विषय को इतनी गहराई तक जिस सहजता से वे ले जाते थे ऐसे वक्ता के साथ श्रोताओं को भी उस भाव-समुद्र में गोता लगाना एक आनंदमयी अनुभव बन जाता था। क्रांतिकारियों पर उन्हें सुनना-पढ़ना एक अद्‌भुत रोमांच रचता था।

मैंने तो एकांत संवाद से सभाओं तक उन्हें सुना है। सिखाने की एक अलग ही आत्मीय शैली थी उनकी। 'देवपुत्र' में उनकी बात 'अपनी बात' होती थी। अपनी बात हो या अन्य आलेख उनकी लेखनी से निकले शब्द मुँह से बोलते प्रतीत होते थे। पता भी नहीं चला कब उन्होंने अपनी बात करना हमें सिखा दिया लेकिन उनके रहते लिखने में एक निश्चिंतता रहती थी अब जबकि वर्ष भर से वे प्रत्यक्ष नहीं है उनकी परोक्ष अनुभूति के सहारे ही देवपुत्रों से अपनी बात करने का अभ्यास बनाना पड़ रहा है हरि इच्छा बलीयसी। सादर नमन उन महात्मन् को।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- शैतान गोगो -चैतन्य ११
- गगन स्लेट है -अमिताभ शंकर राय चौधरी ३२
- बेस्वाद पिज्जा -संजीव जायसवाल 'संजय' ३८

छोटी कहानी

- कथनी और करनी -तरूण कुमार दाधीच ०५
- नन्ही गौरैया -डॉ. निशा मिश्रा 'यामिनी' १८
- दया का फल -पवन पहाड़िया २९
- तुम शुरू तो करो -कविता राय ४२
- पंखों के मेहमान -अनिल पुरोहित ४६

लघु आलेख

- हमारा जीवनदाता सूर्य -राजेन्द्र कोचला 'अंबर' १०

लघु कथा

- चिन्मय और बरैया -डॉ. यशोधरा भटनागर ४१

संस्थान विशेष

- समुद्र विज्ञान संस्थान -डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे १४

प्रेरक प्रसंग

- मैं उनके दुःख से दुखी हूँ -साँवलाराम नामा १६
- परोपकारी सुभाष -मोहन उपाध्याय ४३

कविता

- मकर संक्रांति -दिलीप सिंह राठौर १७
- वीर सिपाही -गोविन्द भारद्वाज २६
- भारत के वीर सिपाही -श्यामादेवी गुप्ता 'दर्शना' २७
- भली भली सुखदाई धूप -रामनरेश 'उज्ज्वल' ३५
- वीणा वादिनी माँ! -भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' ०७
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल २०
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी २८
- छः अँगुल मुस्कान - ३०
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी ३६
- आपकी पाती - ४८
- पुस्तक परिचय - ५०

छात्र प्रबोधन

- अनुशासन और समय प्रबंधन -गोविन्द प्रसाद कारपेंटर २३

बौद्धिक क्रीडा

- गणित की पहेलियाँ -रामचन्द्र राठौर ०६
- बताओ तो जाने -चाँद मोहम्मद घोसी २२
- क्या गायब -संकेत गोस्वामी ३१
- भूल भूलैया -चाँद मोहम्मद घोटी ३४
- बौद्धिक व्यायाम -देवांशु वत्स ४७

चित्रकथा

- इच्छा -संकेत गोस्वामी २५
- स्पेशल गैलरी -देवांशु वत्स ३७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कथनी और करनी

– तरुण कुमार दाधीच

पिताजी के कार्यालय से घर आने से पहले गौरव खेलने के लिए निकल गया था। उसे गए दो घंटे हो चुके थे। उसके माता–पिता बैठक कक्ष में बैठे टीवी चैनल पर समाचार देख रहे थे और गौरव की प्रतीक्षा कर रहे थे। पिछले दिनों से वह अँधेरा होने के बाद घर आ रहा था। उसका ध्यान खेलों में अधिक और पढ़ाई में कम था। इतने में गौरव हाथ में क्रिकेट का बल्ला लिए घर लौटा।

''गौरव! आजकल तुम देरी से घर आ रहे हो। यह अच्छी बात नही है।'' पिताजी ने कहा।

''वो पिताजी! खेलने के बाद मित्रों के साथ थोड़ी गपशप करने बैठ जाते हैं इसलिए।'' गौरव ने लापरवाही से कहा।

''ऐसे थोड़े ही चलेगा। अर्द्धवार्षिक परीक्षा में भी तुम्हें अच्छे नंबर नहीं मिले हैं।'' पिताजी ने डाँटते हुए कहा।

''हाँ पिताजी! अब ध्यान रखूँगा।'' गौरव ने डरते हुए कहा।

''क्या ध्यान रखोगे? पल्लवी से टाइम टेबल बना कर दीवार पर टाँग रखा है। टाइम–टेबल बनाया है तो उसके अनुसार चलना चाहिए। अब अपना ध्यान तुम्हें ही रखना है। पल्लवी बारहवीं के बाद शहर पढ़ने चली गई है।'' माँ ने समझाया।

''पहले तो पल्लवी पढ़ाई में तुम्हारी सहायता कर देती थी।'' पिताजी ने कहा।

''बेटा! पढ़ाई भी आवश्यक है। प्रतियोगिता का जमाना है। दिन–रात एक नहीं करोगे तो जीवन में पिछड़ जाओगे।'' पिताजी ने प्यार से कहा।

''ठीक है! आज से खेलकूद बंद और पढ़ाई शुरू।'' गौरव ने कहा।

''अपने आप सामने आ जाएगा कि तुम कितनी पढ़ाई करते हो।'' पिताजी ने उठते हुए कहा।

तीनों भोजन करने लगे। इसके बाद पल्लवी का फोन आया। माता-पिता से बात करने के बाद उसने गौरव से बात की।

''देख गौरव! मुझे सब पता है कि तुम पढ़ाई में कम और खेल में रुचि ले रहे हो। टाइम-टेबल के अनुसार आज से ही पढ़ाई शुरू कर दो।'' पल्लवी ने कहा।

''हाँ दीदी! अब पढ़ाई करूँगा।'' गौरव ने कहा।

भोजन करने के बाद वह टेबल-कुर्सी पर बैठकर पढ़ाई करने लगा। देर रात तक पढ़ाई करने के बाद सोया।

अगले दिन आठ बजे तक गौरव की नींद नहीं खुली तो माँ ने उसे जगाया।

''देखो, आठ बज रहे हैं। रोजाना छः बजे उठते हो।'' माँ ने कहा।

''वो माँ रात को पढ़ाई करने के बाद देर से सोया था।'' गौरव ने उबासी लेते हुए कहा।

''ठीक है।'' माँ ने कहा।

अगले दिन माँ ने उसे नहीं जगाया। आज वह साढ़े आठ बजे उठा।

''बेटा! मैंने इस तरह पढ़ने के लिए थोड़े ही कहा था।'' पिताजी ने कहा।

''मतलब?'' गौरव ने आश्चर्य से पूछा।

''मतलब यह है कि तुम्हारी कथनी और करनी में अंतर है। जैसा टाइम-टेबल तुमने बनाया है, उस पर अमल तो करो। यह नहीं कि तुम अपनी दिनचर्या ही बिगाड़ दो।'' पिताजी ने कहा।

''आप सही कह रहे हैं पिताजी! मेरे कहने और करने में अंतर है। आज यह बात मेरी समझ में आ गई।'' गौरव ने कहा।

माता-पिता और पल्लवी के कहने का गौरव पर बहुत असर पड़ा। अब उसने नियमित रूप से पढ़ाई करनी प्रारंभ कर दी। इस वर्ष अच्छे प्रतिशत लाने के कारण पिताजी ने उसे साईकिल दिलाई।

- उदयपुर (राजस्थान)

गणित पहेली

गणित की पहेलियाँ

- रामचन्द्र राठौर

(१)
एक रुपए के नींबू दो।
कितने के होंगें नींबू सो।।

(२)
पच्चीस रुपए में मिलते पेन पाँच।
बताओ जल्दी कितने के होंगें सात।।

(३)
नौ नकद तेरह उधार।
अंतर कितना करो विचार।।

(४)
बारह लड्डू, लड़के चार।
दे कितने-कितने एक-एक बार।।

(५)
एक सौ बीस हैं कुल गाय और भैंस।
सत्तर भैंसे चली गईं, कितनी गाएँ शेष।।

- शाजापुर (म. प्र.)

उत्तर- (१) पचास रुपए (२) पैंतीस रुपए (३) चार (४) तीन (५) पचास।

बाल साहित्य में गणित विषय के पोषक : गोपीचंद श्रीनागर

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

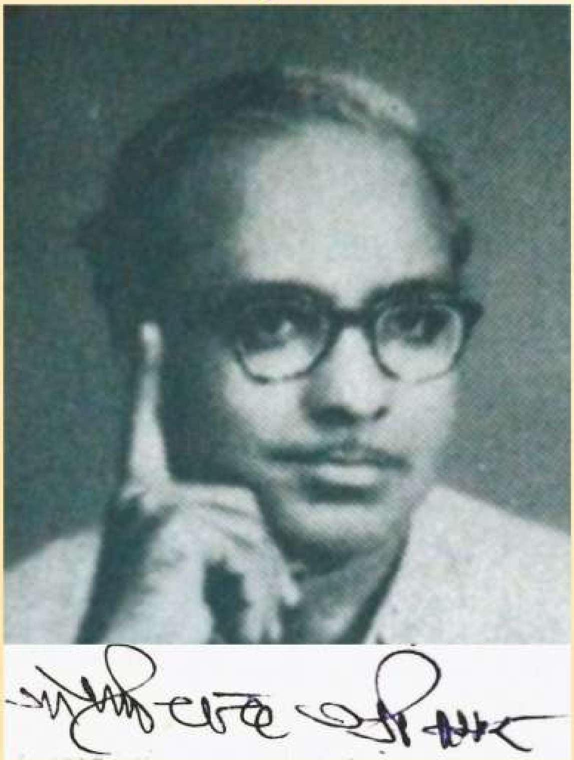

गोपीचंद श्रीनागर हिंदी के ऐसे बाल साहित्य लेखक हैं जिनके लेखन में मौलिक राहों के अन्वेषण और उसके अनुसरण की ललक और झलक देखी जा सकती है। उन्होंने डाक टिकटों के बहाने बाल साहित्य को सूचनात्मक साहित्य से जोड़ा। बच्चों में गणित विषय को लोकप्रिय बनाने के लिए रोचक बाल साहित्य की उपादेयता सिद्ध की। बाल कविता में उन्होंने छंद की दृष्टि से नए प्रयोग किए।

गोपीचंद श्रीनागर का जन्म १७ मार्च १९३४ को उत्तर प्रदेश की औद्योगिक नगरी कानपुर में हुआ। उनके पिता मानिक चन्द्र जौहरी 'चाचा' के नाम से विख्यात थे। ऐसे ही उनकी माताजी राजरानी जौहरी 'बहू जी' कहलाती थीं।

श्रीनागर जी ने कानपुर के डी. ए. वी. कॉलेज से बी. ए. की शिक्षा प्राप्त की। २१ वर्ष की अवस्था में वे लेखन के क्षेत्र में आए तो आजन्म सक्रिय रहे। बाल साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने ललित निबंध, शोध लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, हास्य–व्यंग्य और आलोचना के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। वे यायावर भी थे। भ्रमण में उनकी विशेष रुचि थी। रेल विभाग में जीविका के चलते वे झाँसी आ गए और फिर जीवन पर्यंत यहीं रहे। झाँसी में ही २७ अगस्त २००८ को उनका निधन हुआ।

श्रीनागर जी ने बच्चों के लिए नए रंग ढंग का सृजन किया। उन्होंने बच्चों में फिलैटली के प्रति रुचि जगाने की दिशा में अनूठा कार्य किया। वे इस क्षेत्र में अकेले बाल साहित्यकार माने जाते हैं।

डाक टिकटों के संग्रह और डाक इतिहास के अध्ययन को फिलैटली कहते हैं। उनके फिलैटली आलेखों का अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। बाल साहित्य की विविध विधाओं यथा कहानी, कविता, शिशुगीत, पहेली, आलेख आदि की उनकी रचनाएँ हिंदी की प्रमुख बाल पत्रिकाओं में सम्मान के साथ प्रकाशित होती रहीं। उनकी बाल साहित्य की प्रमुख पुस्तकें हैं– चुनमुन, रुनझुन, गीतों से हम सीखें ज्ञान, नटखट, राम की कथा, जय झाँसी की रानी, नन्हें बच्चे नन्हें गीत, सुन्दर और सजीले गीत, नन्हें–नन्हें फूल, दादी की पहेलियाँ, चिड़ियाँ गातीं, गणित की पहेलियाँ, गणित : गीत में, आजादी की कहानी डाक टिकटों की जबानी, इंद्रधनुषी डाक टिकट इत्यादि।

हिंदी बाल साहित्य में उत्कृष्ट कार्य हेतु उन्हें नागरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया, भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, बाल साहित्य संस्कृति कला विकास संस्थान, बस्ती से सम्मानित भी किया गया। आइए, उनकी कुछ मजेदार और प्रयोगधर्मी रचनाओं का आनंद लेते हैं।

ताना

बिल में घुसते हाथ हिलाते,
चूहा माँगे खाना।
रूठी चुहिया झटपट बोली–
बचा न घर में दाना।
देखो जी, जब पैसे दोगे,
तभी पकेगा खाना।
अपने चुनमुन पढ़ें–लिखेंगे,
सब गाएँगे गाना।
सारे घर का मान बढ़ेगा,
नहीं मिलेगा ताना।

मैं तो गाना गाऊँगी

मुर्गा बोला तोती से,
मैं जयपुर कल जाऊँगा,
लाकर मोती के गहने
उनसे तुझे सजाऊँगा।
म्याऊँ बोली मोती से,
मैं कल काशी जाऊँगी,
दमदम दमके सोने–सी,
ऐसी साड़ी लाऊँगी।
गैया बोली हाथी से,
लल्लू का ब्याह रचाऊँगी,
कहना अपने साथी से,
सबको मैं बुलवाऊँगी।
चिड़िया बोली छोटी–सी,
मैं तो गाना गाऊँगी,
नाचूँगी मैं फुदक–फुदक,
चुन–चुन दाना खाऊँगी।

जब घर आते पापाजी

जब घर आते हैं पापाजी,
सात बजे होते हैं जी।
घर में आते ही पापाजी,
हाथ–पैर धोते हैं जी।
साथ–साथ खाना खाने को,
सभी जमा होते हैं जी।
कथा–कहानी, मीठी गपशप,
सुनकर के सोते हैं जी।
हँसते–गाते हम जगते हैं,
कभी नहीं रोते हैं जी।

गणित पहेली १

दस रुपये में चार पूड़ियाँ,
देता है हलवाई।
चार जनों ने सुबह–सुबह जा,
दस–दस पूड़ी खाई।
जरा सोचकर यह बतलाओ,
कितने रुपये देने।
सौ रुपये का नोट थमाकर,
वापस कितने लेने ?

गणित पहेली २

दादा जी ने घर पर पाले,
सुंदर से दो कुत्ते काले।
सुबह–शाम माँ इन कुत्तों को,
मोटी रोटी दो–दो डाले।
सात दिनों में कितनी रोटी,
बोलो तो ये कुत्ते खा लें ?

गणित पहेली ३

राज नाथ के बड़े पुत्र की,
हुई नगर में शादी।

जब बाराती चले गाँव से,
थी आधी आबादी।
बचे गाँव में थे छ: बच्चे,
कुल दस दादा–दादी।
सोच समझकर अब बतलाओ,
तुम पूरी आबादी ?

गणित पहेली ४

पीले–पीले केले चुनकर,
आए मेरे नाना जी।
कुछ डलिया में, कुछ थैली भर,
लाए घर पर नाना जी।
डलिया में कुल बीस अधिक हैं,
बतलाती हैं नानी जी।
थैली के कुछ चौदह तुम सब,
खा लो कहती मामा जी।
और पूछती कितने केले,
घर लाए थे नाना जी ?

गणित पहेली ५

बबलू बोला ट्यूशन पढ़ने,
चलना तीन बजे।
मेरे घर पर तुम आ जाना,
पौने तीन बजे।
बीस मिनट में जा पहुँचेंगे,
टीचर जी के घर।
तीस मिनट में हल कर लेंगे,
इंग्लिश का पेपर।
कितना टाइम मुझे लगेगा,
पढ़कर आने में।
माँ का कहना देर न करना,
खाना खाने में।

गणित पहेली ६

पापा जी ने चार रोटियाँ,
दादा जी ने दो।
मुश्किल से आधी थी खाईं,
मुन्ने जी ने रो।।
मम्मी ने कुल दस सेंकी थीं,
हाथ लिए फिर धो।
शेष बची अब कितनी रोटी,
बतलाओ, जोजो ?

गणित पहेली ७

सोमवार से गुरुवार तक,
मेरी चली परीक्षा।
आधा लीटर अधिक दूध लूँ,
माँ जी की थी इच्छा।
घर पर नियमित दो लीटर ही,
दूध रोज था आता।
इन दिवसों का दूध बताओ,
मेरे प्यारे भ्राता ?

गणित पहेली ८

पाँच मिनट में चक्का घूमे,
पूरे चौंसठ बार।
बैठ साइकिल कक्का बाँटे,
तीस मिनट अखबार।
कितने चक्कर तीस मिनट में,
खाए भैया चक्का।
जो बतलाये शाबाशी दें,
उसको मेरे कक्का।

– शाहजहाँपुर
(उत्तर प्रदेश)

उत्तर – (1) : 4 x 10 = 40 पूड़ियाँ, लेना शून्य। (2) : 2 x2x2x7 = 56 रोटियाँ। (3) : 6+10 = 16 x2=32 कुल आबादी। (4) : थैली में 14, डलिया में 14+20 = 34 कुल 48 केले अर्थात् 4 दर्जन। (5) : बबलू को 20+30+20 = 70 मिनट साथी को 15+20+30+20+15= 100 मिनट। (6) : $4+2+1/2=30\frac{1}{2}$ रोटियाँ। (7) : 4 दिन x 2.5=10 लीटर। (8) : 30÷5=6x64= 384 चक्कर।

हमारा जीवन दाता सूर्य

– राजेन्द्र कोचला 'अंबर'

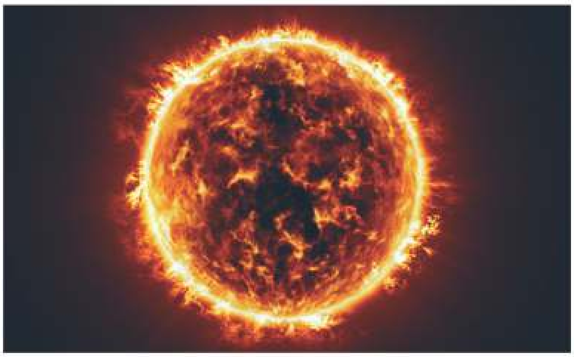

संपूर्ण ब्रह्माण्ड में सूर्य के समान प्रकाशवान और गर्म ग्रह और कोई नहीं है। सूर्य से संपूर्ण संसार को प्रकाश ही नहीं जीवन भी मिलता है। आकाश के अरबों तारों में से सूर्य भी एक मध्यम आकार का तारा है। सूर्य का अपना सौर मंडल है। इसके चारों ओर घूमने वाले आकाशीय पिण्डों के समूह को सौर–मंडल या सौर परिवार कहते हैं। इस सौर परिवार में पृथ्वी सहित नौ ग्रह हैं। छः के अपने उपग्रह भी हैं इनके अतिरिक्त १५०० छोटे–छोटे ग्रह पुच्छल तारे, उल्काएँ भी सौर मंडल के सदस्य हैं। वे सभी पिण्ड सूर्य के चारों ओर एक ही दिशा में गति करते रहते हैं। इससे पता चलता है कि इनकी उत्पत्ति एक ही प्रकार से हुई है।

सूर्य पृथ्वी से नौ करोड़ उन्तीस लाख साठ हजार मील दूर है। इसका व्यास १३,९२,००० कि. मी. (८,६५,००० मील) है। जबकि पृथ्वी का व्यास मात्र ७,९२७ मील (१२,७५६ कि. मी.) ही है। सूर्य का आयतन पृथ्वी के आयतन से लगभग १३ लाख गुना बड़ा है। सूर्य के अंदर पृथ्वी जैसे तेरह लाख पिण्ड समा सकते हैं। सूर्य का भार पृथ्वी के भार से तीन लाख तैंतीस हजार चार सौ गुना है। सूर्य गर्म गैसों से मिलकर बना है। सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में ८ मि. २० सेकण्ड लगते हैं।

सूर्य स्वयं भी परिवार सहित आकाश गंगा की परिक्रमा करता है। हाँ इसे एक परिक्रमा पूरी करने में लगभग २४ करोड़ वर्ष का समय लगता है। इसके अंदर इतनी गर्मी है कि इसके पास कोई भी वनस्पति या जीव जिंदा नहीं रह सकता। यह आग का एक तपता हुआ गोला है।

इसके केन्द्र का तापमान १ करोड़ ५० लाख डिग्री सेंटीग्रेट के लगभग है। सूर्य की सतह चार गैसीय परतों से मिलकर बनी है। सबसे बाहर वाली परत 'फोटोस्फीयर' का तापमान लगभग ६००० डिग्री सेंटीग्रेट है।

इसकी सतह रिवर्सिंग लेयर है। तीसरी सतह क्रोमोस्फीयर है जो लगभग नौ लाख मील मोटी है इसका तापमान ५००० डिग्री सेंटीग्रेट है। इसे 'कोरोना' भी कहते हैं।

सूर्य का जीवनकाल लगभग १० अरब वर्ष है यह अब कम से कम ५ अरब वर्ष तो ऐसे ही प्रकाश और ऊर्जा देता रहेगा।

सूर्य की सतह पर कुछ धब्बे भी दिखाई देते हैं। आपके आश्चर्य होगा कि कुछ धब्बे तो इतने बड़े हैं कि जिनमें सैकड़ों पृथ्वी समा सकती है। ये धब्बे सूर्य के ५० करोड़ वर्ग मील के क्षेत्र में फैले हुए हैं।

४ जून १९४६ को एक ऐसा धब्बा देखा गया जिसकी लम्बाई तीन लाख मील व चौड़ाई सत्तर हजार मील थी। इन धब्बों का स्थान, आकार और भ्रमण काल में परिवर्तन होता रहता है। इन धब्बों का पता प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलिलियो ने अपने बनाए नए दूरबीन से वर्ष १६१० में लगा लिया था। ये धब्बे शक्तिशाली चुम्बकीय क्षेत्र पैदा करते हैं। इनका तापमान लगभग ४०,००० डिग्री सेंटीग्रेट होता है। सूर्य से मात्र १ ऊर्जा ही पृथ्वी ग्रहण कर पाती है।

ऐसा है यह सूर्य।

– इन्दौर (म. प्र.)

शैतान गोगो

– चैतन्य

गोगो हाथी बड़ा शैतान था। अपनी विशाल काया पर उसको बड़ा गर्व था। अन्य जानवरों को परेशान करने में उसको बड़ा आनन्द आता था।

जानवर पेड़ों की छाया में धूप के दिन अपना समय बिताया करते थे। गोगो ने उन पेड़ों की डालियाँ तोड़कर उनकी समस्या बढ़ा दी थी।

एक दिन गोगो ने अपनी सूंड में पानी भर कर काले चींटें और चीटियों के बिल में डाल दिया था। चींटें और चीटियाँ किसी तरह अपनी जान बचाने में सफल हो गए थे।

रैनी तितली और भोंभों भौंरा ने अपनी–अपनी फुलवारी में फूल के पौधे उगाए थे। एक दिन गोगो ने फुलवारी में घुस कर पौधे कुचल डाले थे।

जेजे खरगोश ने अपने खेत में गाजर की खेती की थी। गाजर के पौधे लहलहा रहे थे। जेजे की गैरहाजिरी में एक दिन गोगो ने गाजर के लहलहाते पौधों को रौंद डाला था।

जंपी बंदर अपने मित्रों के साथ एक दिन एक पेड़ की डाल में झूला झूल रहा था। गोगो ने उस डाल को तोड़कर उन्हें नीचे गिरा दिया था। जंपी के मित्र डंपी के सिर पर गहरी चोटें आई थीं। उसको अस्पताल में भर्ती करना पड़ा था।

कालू भालू के खरबूज और तरबूज के खेत की बेलें उखाड़ कर गोगो ने खेत को सफाचट कर दिया था। खेत की दुर्दशा देखकर कालू ने अपना सिर पटक लिया था।

गोगो अपनी शैतानी का अंजाम दिखाने से बाज नहीं आ रहा था। जानवर गोगो के रोब और ताकत के सामने अदना और कमजोर अनुभव कर रहे थे। गोगो की शैतानियों देखकर गोमो गैंडा ने शेरू शेर से कहा– ''पेड़ों की कटाई से चंपक वन उजड़ रहा। बचे–कूचे पेड़ों की डालियाँ भी नष्ट हो जाएँगी तो हमें पेड़ों की छाया

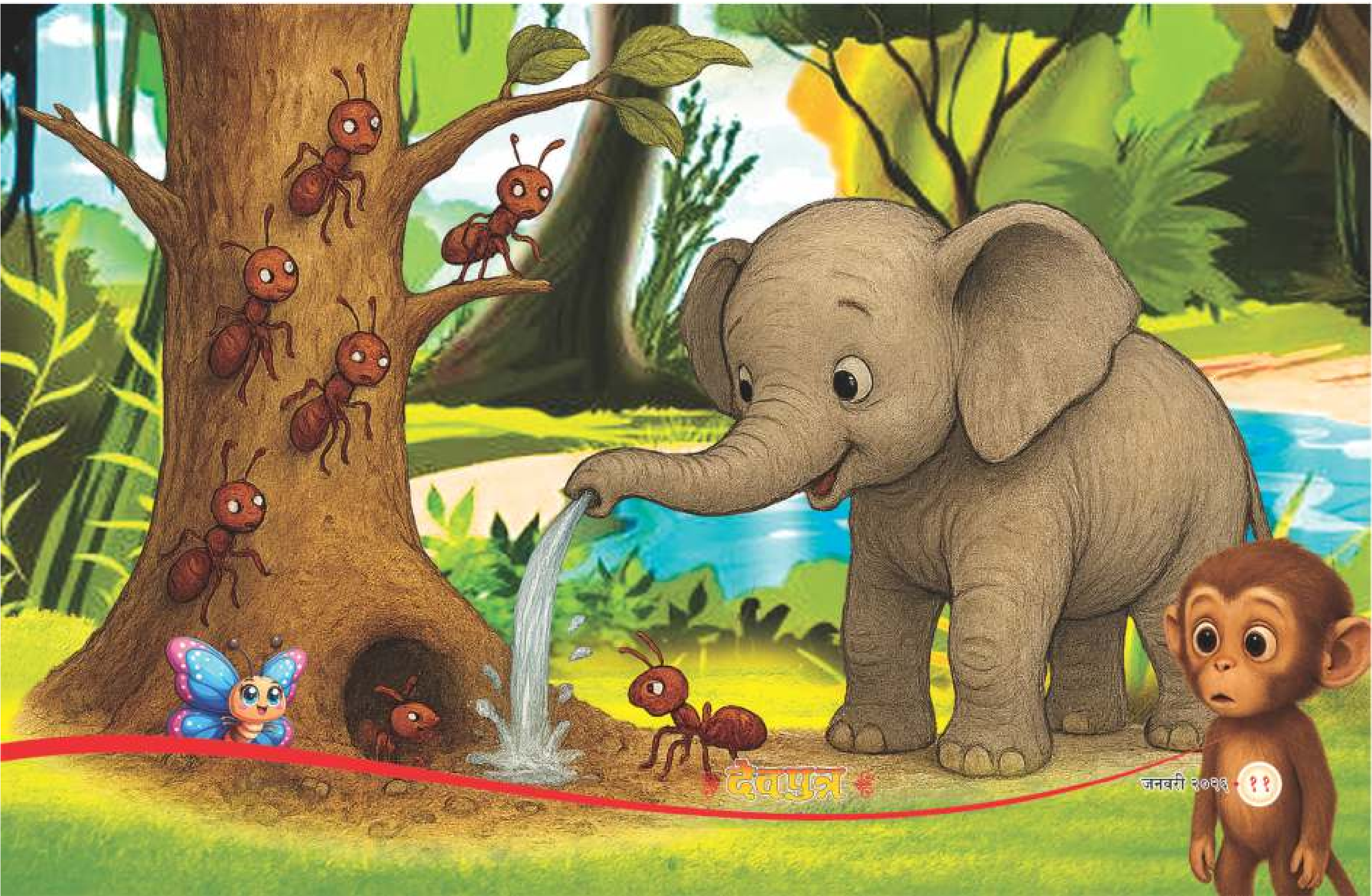

के लिए भटकना पड़ेगा। पेड़ों को उखाड़ कर गिराने और पेड़ों की डालियाँ तोड़ डालने का जनून गोगो के सिर पर सवार हो गया है। यदि यह सिलसिला चलता रहा तो हमें बेघर होने में देर नहीं लगेगी।''

''इसलिए हमें रेंजर साहब के कार्यालय में जाकर गोगो की शिकायत करनी पड़ेगी।'' शेरू ने सुझाव दिया।

एक दिन जानवरों ने गोगो की करतूतों की शिकायतें रेंजर जग्गू हाथी के पास कर दी। जग्गू उस रेंज का रेंजर था। और गजू हाथी उस रेंज का फॉरेस्टर था। गोगो गजू का भतीजा था। इसलिए जग्गू ने जानवरों की शिकायतें दबा दी थीं।

''इस आयु में हर बच्चा शैतानियाँ करता है। आयु बढ़ते गोगो सुधर जाएगा।'' रेंजर जग्गू ने कहा था। इसलिए गोगो का मन शैतानी करने के लिए बढ़ा हुआ था।

एक बार रात के समय गोगो ने दीमकों की बांबी तोड़ दी थी। बांबी तोड़ने में उसको बड़ा आनन्द आता था। उस बार बांबी की मिट्टी से दबकर कई दीपक दम तोड़ चुके थे। कुछ जख्मी होकर अस्पताल में थे।

झून्नू दीमकों की रानी थी। उसकी मुस्तैदी और श्रमिक दीमकों के कड़े परिश्रम से दूसरे दिन एक नई बांबी तैयार हो गई थी।

लेकिन रात आते ही गोगो ने पुन: दीमकों की बांबी को तोड़ दिया था।

रानी झून्नू के श्रमिक दीमक काफी मेहनती थी। इसलिए हर बार बांबी एक दिन में खड़ी हो जाती थी। लेकिन बार-बार की मेहनत से रानी झून्नू और उसके श्रमिक दीमक थक चुके थे।

पिछली रात को गोगो ने हर बार की तरह रानी झून्नू की बांबी को तोड़ कर नष्ट कर दिया था। नयी बांबी तैयार करने में झून्नू के श्रमिक दीमक जुट गए थे। रानी झून्नू एक पेड़ की छाया में बैठ कर उन्हें देख रही थी।

तभी चींटें और चींटियों की रानी चून्नी ने पीछे से आकर पूछा- ''झून्नू, क्या देख रही हो?''

''अपने श्रमिकों का परिश्रम देख रही हूँ। गोगो ने पिछली रात बांबी फिर तोड़ दी। गोगो की शैतानी रोज ऐसी चलती रहे तो हम कहीं के नहीं रहेंगे।'' रानी झून्नू ने व्यथित होकर कहा।

''गोगो को सबक सिखाने के लिए मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। आइडिया दो हमें क्या करना है।''

रानी चून्नी ने गोगो को सबक सिखाने के लिए आइडिया सुनाना चाहा।

''बहन! इस समय मुझे कोई आइडिया नहीं सूझ रहा है। तुम ही अपना दिमाग चलाओ ना?'' रानी झून्नू बोली।

''अच्छी बात है। मुझे कुछ सोचने दो। क्योंकि मुझे भी गोगो से बदला लेना है।'' तैश में आकर रानी चून्नी ने कहा।

''किस बात का बदला?'' रानी झून्नू ने पूछा।

''मूसलाधार बारिश के कारण एक दिन हमारे बिल में पानी घुस आया था। जान बचाने के लिए हम चींटें और चींटियों ने पेड़ की डाल पर बसेरा डाला था। गोगो को भनक पड़ गई और उसने पेड़ की डालियाँ तोड़ डालीं। हम जमीन पर गिर कर जख्मी हो गए। उस घटना का बदला मैं अवश्य लूँगी। अच्छा, मैं चलती हूँ। कोई न कोई विचार भिड़ा कर मैं तुम्हारे पास आऊँगी।'' रानी चून्नी आश्वासन देकर चली गई।

कड़ी मेहनत से रानी झून्नू के श्रमिक दीमकों ने दिन ढ़लने के पहले एक नई बाबी खड़ी कर दी थी।

०२-०३ घंटों के बाद रानी चून्नी विचार सोचकर रानी झून्नू के पास आई।

''वाह! क्या शानदार बांबी तैयार हो गई। गोगो को सबक सिखाने के लिए यह काफी है।'' कह कर रानी चून्नी ने आइडिया सुना दिया।

''नई बांबी देखकर आज रात बांबी तोड़ने का मजा लेने के लिए गोगो अवश्य आयेगा। शाम ढ़लते मैं अपनी सेना लेकर आ जाऊँगी।'' रानी चून्नी अपनी जांबाज सेना को तैयार करने के लिए चल दी।

योजना के अनुसार शाम ढ़लते रानी चून्नी अपनी जांबाज सेना के साथ रानी झून्नू की बांबी में आ

गई।

''तुम अपनी प्रजा के साथ जमीन के अंदर चली जाओ। मैं अपनी जांबाज सेना के साथ बांबी के ऊपर आस–पास रहूँगी।'' रानी चून्नी ने रानी झून्नू को आदेश दिया।

ठीक है! स्वीकृति में रानी झून्नू ने सिर हिलाया।

अँधेरा घिरते ही रानी झून्नू बांबी में जमीन के अंदर दीमकों को लेकर चली गई। रानी चुन्नी की जांबाज सेना बांबी के ऊपर आस–पास घात लगाकर गोगो के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

गोगो झूमता हुआ बांबी के पास आता दिखाई पड़ा। बांबी के पास पहुँचते ही गोगो ने अपनी सूंड़ से बांबी को तोड़ना शुरू कर दिया। तभी रानी चून्नी की जांबाज सेना ने हजारों की तादाद में बिजली की तरह हमला बोल दिया। सैकड़ों की तादाद में चींटें और चींटियाँ गोगो की सूंड के अंदर गए। और अंदर से सूंड़ को जख्मी करना शुरू कर दिया।

दर्द के सिहरन से गोगो के होश उड़ गए। देखते–देखते चींटें और चींटियों की तादाद गोगो के शरीर में छा गई। कोई कान के अंदर घुसकर किरंचें पैदा करने लगे तो कोई आँखों की पलकें काटने लगे। सूंड के अंदर घुसे चींटें–चींटियों को बाहर निकालने के लिए गोगो ने कई बार सूंड को पटका। कई बार तेज साँसें छोड़ीं। लेकिन गोगो का हर प्रयास विफल सिद्ध हुआ। जोंक की तरह चींटें और चींटियाँ सूंड के अंदर चिपक गए थे।

सूजन से गोगो को छटपटाहट आने लगी तो उसने शोर मचाया, ''बचाओ! बचाओ! बचाओ! माँ....! माँ.....! कहाँ हो? आओ! बचाओ!''

आखिर चीखते और शोर मचाते गोगो धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही रानी चून्नी की जांबाज और चतुर सेना गोगो को छोड़कर नौ दो ग्यारह हो गई।

गोगो की चीख पुकार सुनकर गोगो की माँ जगी थोड़ी देर के बाद हाँफती हुई वहाँ पहुँची।

''हाय! हाय! क्या हो गया मेरे बेटे को?'' जगी अपने बेटे गोगो को देखकर हक्की–बक्की हो गई।

''माँ! मैं दीमकों की बांबी तोड़ रहा था। कमबख्त चींटें और चींटियों ने हमला बोल दिया और मेरी सूंड़ को जख्मी कर दिया। मुझे क्या ज्ञात था कि बांबी में दीमकों की जगह चींटें और चींटियाँ होंगे।'' कराहते हुए गोगो ने कहा।

''मैं हमेशा तुम्हें समझाया करती थी ना कि शैतानियाँ छोड़ दो। किन्तु तुम बाज नहीं आए। सबक मिल गया था? चींटें और चींटियों को छोटा–सा जीव समझा न करो। हमारी जाति के ये पक्के दुश्मन हैं। हमें इनसे हार माननी ही पड़ती है।'' गोगो की माँ जगी ने कहा।

''माँ! ऐसी शैतानियाँ और कभी नहीं करूँगा। किसी जानवर, कीट–पतंग, पशु–पक्षी का नुकसान नहीं करूँगा। मुझे घर ले चलो माँ!'' गोगो गिड़गिड़ाने लगा।

गोगो को उठा कर जगी अपने घर ले गई। लड़खड़ाते हुए गोगो को जाते देख चून्नी की सेना को हँसी आ गई।

तभी रानी झून्नू दीमकों के साथ रानी चून्नी के पास आई।

''बहन! तुम्हारी तरकीब और सहायता के लिए धन्यवाद! तुम्हारी जांबाज सेना ने गोगो को अच्छी नसीहत दी।'' अपनी खुशी जाहिर करते हुए रानी झून्नू ने कहा।

''धन्यवाद क्यों? हर मुसीबत में हमें एक दूसरे की सहायता करनी है। अच्छा तो अब हमें घर जाने की अनुमति दो।'' रानी चून्नी ने कहा और अपनी जांबाज सेना को लेकर चल दी।

दूसरे दिन सुबह शैतान गोगो को सबक मिलने की सूचना चंपक वन में फैल गई। जानवरों, पशु–पंछियों और कीत–पतंगों के बीच रानी चून्नी की सराहना बहुत होने लगी। गोगो ने उस दिन से शैतानी छोड़ दी।

– दानाउली (झारखण्ड)

समुद्र विज्ञान संस्थान, मुंबई

– डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

जल का सबसे विशाल भण्डार समुद्र है, श्रीमद् भागवत पुराण इसका प्रमाण है। ऋग्वेद ने इसे अमृत का स्रोत तो महाभारत ने सभी रत्नों का भण्डार बताया है, वाल्मीकि रामायण में श्रीराम समुद्र से पथ देने की प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार सारांशत: यह कहना सर्वथा उचित होगा कि समुद्र अनादि काल से मानव सहित सकल सृष्टि में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऋग्वेद जिसे पृथ्वी, आकाश और वातावरण को पूर्ण करने वाला निरूपित करता है ऐसे रत्नाकर की महिमा अनन्त है।

हमारे देश भारत की समुद्री सीमा लगभग ७५१६ किलो मीटर है जो ९ राज्यों गुजरात, महाराष्ट्र, गोआ, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र, ओडिशा तथा पश्चिम बंगाल को अपने तटों से जोड़ती है, इससे हमारा देश मत्स्य संसाधन, तैल–गैस, खनिज, व्यापार मार्ग और पर्यटन की दृष्टि से सम्पन्न होता है और इस समुद्री क्षेत्र की रक्षा में भारत की नौसेना और तटरक्षक बल सदैव सन्नद्ध रहते हैं। यद्यपि कभी–कभी यही सागर समुद्री तूफानों के रूप में कुपित होकर विनाशलीला भी रच जाता है।

सागर क्षेत्र गहराई के मान से महाद्वीपीय उथला भाग (शेल्फ), महाद्वीपीय ढाल और गहरे महासागरीय तल के रूप में विभक्त किया जाता है।

मत्स्यपालन और खाद्य प्राप्ति, व्यापार व नौवहन, खनिज, तेल व प्राकृतिक गैस की उपलब्धता के साथ ही पर्यटन और रोजगार के माध्यम से समुद्र का हमारे लिए आर्थिक महत्व बहुत अधिक है।

अपने समुद्र की इसी आर्थिक शक्ति और विकास का आधाररूप भूमिका के लिए हमारे देश में महासागरीय रहस्यों को समझने के लिए और उनका अध्ययन करने के लिए **समुद्र विज्ञान संस्थान** (National Institute of Oceanography-NIO) की स्थापना १९६६ में की गई। मुंबई में एक प्रमुख केन्द्र के साथ गोआ इसका मुख्यालय है कोच्चि और विशाखापट्टनम् में भी इसके केन्द्र है।

यह महत्वपूर्ण संस्थान समुद्रों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। समुद्र में पाए जाने वाले जीव जन्तुओं, खनिजों, तेल व प्राकृतिक गैस जैसे संसाधनों की खोज, समुद्र के प्रदूषण और उसके प्रभावों का अध्ययन, समुद्र विज्ञान व प्रौद्योगिकी से

समुद्र विज्ञान संस्थान, गोआ

जुड़े नए शोध करना और तटीय क्षेत्रों को सुरक्षित रखने के उपाय बनाना आदि इस संस्थान के प्रमुख उद्देश्य हैं। जिनकी पूर्ति के लिए यह सागर के तल में जाकर जल, मिट्टी व खनिज के नमूने संग्रह करता है, समुद्री जीवों पर शोध करता है तथा जलवायु परिवर्तन व समुद्र के जलस्तर में वृद्धि का अध्ययन करता है। साथ ही मछली पालन और नौ वहन (Shipping) के लिए वैज्ञानिक जानकारी भी उपलब्ध कराता है।

इस प्रकार यह हमारे देश को समुद्र व उससे जुड़े संसाधनों के सही उपयोग व संरक्षण में सहायता करता है। इन शोधों से उद्योगों, वैज्ञानिकों व मछुआरों को लाभ मिलता है।

समुद्र विज्ञान संस्थान (NIO,CSIR) उच्च शिक्षा व शोध कार्य के लिए है। जिसमें पहले विज्ञान विषय लेकर १२वीं फिर बी.एससी.। एम.एससी. अथवा बी. टेक या एम. टेक करके CSIN-NET/GATE उत्तीर्ण कर NIO मैं Ph.D. व शोध कार्य के लिए प्रवेश लिया जा सकता है।

अपने राष्ट्र व स्वयं के लिए यह एक श्रेष्ठ कॅरियर वाला क्षेत्र है।

– भोपाल (म. प्र.)

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में समुद्र

ऋग्वेद में– समुद्र को अमृत का स्रोत कहा गया है–

''समुद्राद् धन्वा पृथिव्या उदानं
दिवं चिदन्तरिक्षं च पृणाति।''

(ऋग्वेद १.१६४.४७)– समुद्र पृथ्वी, आकाश और वातावरण को पूर्ण करता है।

भागवत पुराण में– समुद्र को जल का महान भंडार कहा गया है।

''समुद्रं नाभ्यन्वयमानमन्ते
जलोदधिं यस्य वदन्ति लोका:।''

महाभारत के अनुसार समुद्र सभी रत्नों का भंडार है।

''समुद: सर्वरत्नानां निधानं पृथिवीपते।''

(महाभारत, सभापर्व)

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम समुद्र से मार्ग देने की प्रार्थना करते हैं–

''नम: समुद्राय महोदधये नम:।''

मैं उनके दु:ख से दुखी हूँ

– साँवलाराम नामा

स्वामी विवेकानन्द के प्रवचनों की अमेरिका में बड़ी धूम मची थी। एक अमेरिकन दंपति को प्रवचनों का काफी प्रभाव पड़ा तो उन दंपति ने उनसे अनुनय विनय किया कि एक रात उनके यहाँ भोजन तथा विश्राम करें। स्वामीजी ने सप्रेम आग्रह पर निमंत्रण स्वीकार कर लिया। शाम को उस परिवार में स्वामी जी का भोजन हुआ। फिर एक कमरे में उनके सोने की आरामदायक व्यवस्था कर दी गई। बगल वाले कमरे में दंपति ने अपने बिस्तर लगाए।

रात के ११-१२ बजे अचानक महिला ने किसी के दर्द भरी सिसकने की करुणाजनक आवाज सुनी। उसको ऐसा अहसास हुआ कि स्वामी जी के कमरे से ही आवाज आ रही है। उसने तत्काल पति को जगाया और दोनों स्वामी जी के कमरे में धीरे-धीरे कदम रखे। वहाँ जाकर देखा, स्वामी जी जाग रहे हैं। उनकी आँखों से अविरल आँसू बह रहे हैं और सारा तकिया आँसुओं से गीला हो गया है। दोनों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

उन्होंने स्वामी जी से कहा– ''हमें क्षमा करें। आपकी आँखों में आँसू क्यों? आपको दर्द, दु:ख, कष्ट क्या है? शायद भोजन या बिस्तर की व्यवस्था में कोई कमी रह गई है?'' तब स्वामी विवेकानन्द जी बोले– ''प्यारे भाई! आपने तो बड़ा ही स्वादिष्ट मन भावन भोजन और आनंद, आरामदायक बिस्तर मुझे दिया है।

इसमें कोई दो राय नहीं हैं, लेकिन आज मैं जब स्वादिष्ट भोजन करके, इस आरामदायक बिस्तर पर सो रहा हूँ, तब मुझे चैन नहीं, क्योंकि मेरा ध्यान अपने उन करोड़ों निर्धन, असहाय, मासूम भारतवासियों मेरी मातृभूमि की ओर बरबस जा रहा है, जिन्हें भरपेट भोजन नहीं मिला होगा।

इस कड़ाके की ठंड़ और राज में जिनके पास गर्म, ऊनी कपड़े भी नहीं होंगे। ऊपर अम्बर नीचे अवनि पर में ठिठुर रहे होंगे, हाड़ काँप रहे होंगे। मैं उनकी दयनीय दशा का विचार कर ही दु:ख से दुखी हूँ।''

यह स्वामी विवेकानन्द जी की अंत: वेदना सुन दोनों की आँखों से आँखें भर गई। धन्य हो! स्वामी विवेकानन्द जिनकी अभाववश मातृभूमि के करोड़ों दरिद्रों की विदेश में भी वेदनाएँ नहीं भूलें। जिन्होंने भारत जागो! विश्व जगाओ!! का शंखनाद किया।

– भीनमाल
(राजस्थान)

मानवता के ज्योति पुँज स्वामी विवेकानन्द

मकर संक्रांति

उत्तरायण की किरण ले आया
मकर संक्रांति पर्व है आया।
पतंगों से अंबर भरमाया
हम बच्चों के मन को भाया।।
गुड़-तिल का महत्व बड़ा है, आज से दिन बड़ा हुआ है।
गिल्ली-डंडा खेलें बच्चे, गलियों में खूब शोर हुआ है।।
बादल पर उड़े चंकी की
रंग-बिरंगी लहरिया पतंग।
थामें उचका मीनू बहिना
देख-देखकर सभी है दंग।।
आपस में रहा फिर भेद कहाँ, दुश्मनों में हो गया अब मेल।
मैदानों में डट गई टोलियाँ, खेलें अब तो जमकर खेल।।
हम बच्चों के मन को भाया,
मकर संक्रांति पर्व है आया।

- दिलीप सिंह राठौर
इन्दौर (म. प्र.)

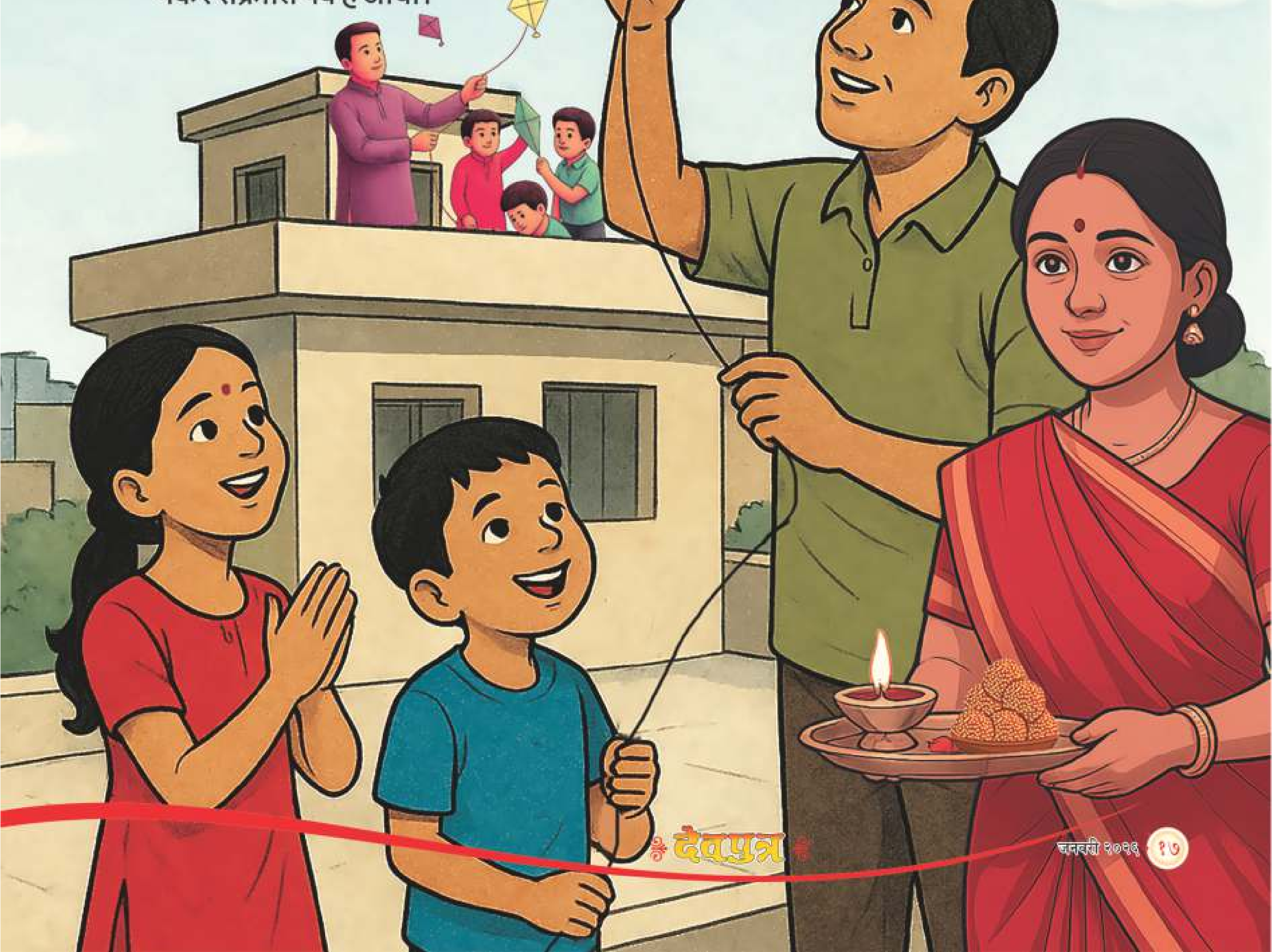

नन्ही गौरैया

– डॉ. निशा मिश्रा 'यामिनी'

गाँव के किनारे एक विशाल पीपल का पेड़ था, जहाँ बहुत सारे पक्षी रहते थे। उसी पेड़ की एक घनी डाल पर एक छोटा–सा नीड़ था, जहाँ नन्ही गौरेया 'चिंकी' अपने माता–पिता के साथ रहती थी।

चिंकी बाकी गौरेयों की तरह दिखती थी। छोटे–छोटे भूरे पंख, गोल–गोल चमकती आँखें, और प्यारी–सी चोंच। लेकिन उसे उड़ने से बहुत डर लगता था। जब भी उसकी माँ उसे उड़ने के लिए कहती, वह घबराकर अपने पंख समेट लेती।

माँ से कहती– ''मैं नहीं उड़ सकती मुझे चोट लग जाएगी यदि मैं गिर कर मर गई तो उड़ना ना... बाबा... ना।''

''बेटा! उड़ना सीखना बहुत आवश्यक है।'' माँ प्यार से समझाती।

''मुझे डर लगता है माँ! कितने बार यह बात तुम्हें बताऊँ, कहीं मैं गिर गई तो?'' चिंकी सहमी हुई आवाज में कहती।

माँ समझाती, ''यदि तुम प्रयत्न ही नहीं करोगी, तो उड़ोगी कैसे? हर पंछी को पहली बार डर लगता है, लेकिन जब वह हिम्मत करता है, तब ही उड़ना सीखता है।''

लेकिन चिंकी फिर भी हिम्मत नहीं कर पाती। वह सोचती, यदि मैं गिर गई तो क्या होगा? यदि मैं उड़ नहीं पाई तो? और हर बार उसकी कोशिश वहीं रुक जाती।

एक दिन शाम के समय अचानक मौसम खराब होने लगा। काले–काले बादल छा गए, बिजली कड़कने लगी और तेज हवा चलने लगी। जंगल के सभी पक्षी अपने–अपने घोंसलों में दुबक गए।

चिंकी अपनी माँ के पंखों के नीचे डरकर छिप गई। बाहर हवा इतनी तेज थी कि पीपल के पेड़ टहनियाँ भी झूमने लगीं। घोंसले के चारों ओर पत्तियाँ उड़ने लगीं। अचानक एक जोरदार झोंका आया और चिंकी का घोंसला डाल से हिलने लगा।

''माँ! घोंसला गिरने वाला है।'' चिंकी ने घबराकर कहा।

''चिंकी! हमें उड़ना होगा! यह डाली हमें काफी समय तक नहीं संभाल पाएगी, चलो बेटा! उड़ो।'' माँ ने कहा।

माँ और पिताजी उड़कर एक ऊँची डाल पर जा बैठे, लेकिन चिंकी वहीं घोंसले में बैठी रही। उसे उड़ने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

''उड़ो, चिंकी! जल्दी करो?'' पिताजी ने पुकारा।

लेकिन चिंकी उड़ नहीं पाई। तभी एक जोरदार हवा का झोंका आया और घोंसला डाल से अलग होकर नीचे गिर पड़ा। चिंकी जमीन पर गिर गई।

चिंकी को हल्की–सी चोट आई, लेकिन वह

ठीक थी। उसने ऊपर देखा। माँ–पिताजी अब भी ऊँची डाल पर बैठे थे, लेकिन चिंकी बहुत नीचे थी। अब उसे स्वयं ही उड़कर ऊपर जाना था।

उसका दिल बहुत तेजी से धड़क रहा था। ''यदि मैं उड़ नहीं पाई तो? यदि फिर से गिर गई तो?'' वह सोचने लगी।

तभी उसने देखा कि पास ही एक मोटी–सी बिल्ली दबे पाँव उसकी ओर बढ़ रही थी। अब उसके पास केवल दो ही रास्ते थे। या तो उड़कर अपनी जान बचा ले या फिर बिल्ली का शिकार बन जाए।

अब तो डर से उसकी साँसें और भी तेज हो गई, लेकिन इस बार उसे उड़ना ही था। उसने अपनी छोटी–छोटी टांगों से जोर लगाया, पंख फैलाए और जमीन से ऊपर उठने का प्रयत्न किया।

पहली बार में वह अधिक ऊपर नहीं उड़ पाई, लेकिन वह इस बार गिरी नहीं!

''तुम कर सकती हो, चिंकी!'' उसने अपने आप से कहा।

उसने एक बार फिर जोर लगाया, और इस बार वह थोड़ी और ऊँचाई तक पहुँच गई। वह बार–बार अपने पंख फड़फड़ा रही थी, और धीरे–धीरे हवा में ऊपर उठने का प्रयत्न लगातार किए जा रही थी।

चिंकी ने पहली बार अनुभव किया कि हवा उसके पंखों को सहारा दे रही थी। जैसे–जैसे वह ऊँचाई की ओर बढ़ रही थी, उसकी घबराहट वैसे–वैसे कम होने लग रही थी।

आखिरकार, बहुत प्रयत्नों के बाद, वह माँ–पिताजी के पास पहुँच गई।

''माँ! पिताजी देखो मैंने कर दिया।'' वह खुशी से चहक उठी।

माँ–पिताजी गर्व से मुस्कुरा उठे। ''देखो, हमने कहा था न कि तुम्हें बस हिम्मत करनी थी?''

उस दिन के बाद से चिंकी का डर हमेशा के लिए गया। अब वह पूरे जंगल में बेझिझक उड़ती और बाकी छोटे–छोटे शावक पंछियों को भी हिम्मत करने की सीख देने लगी।

''डर को हराकर ही हम अपनी असली उड़ान भर सकते हैं।'' यह चिंकी सीख देने लगी।

– मुंबई (महाराष्ट्र)

सुभाषित

साहस बल सबसे बड़ा,
निर्बलता डर घोर।
साहस से संभव सभी
कर न सके जो और।।
'साहस' गुण–सेनापति
'सत्य' श्रेष्ठ गुणराज।
मंत्री निपुण 'विवेक' है
सद्‌गुण राज–समाज।।

छूना है आकाश

– रजनीकांत शुक्ल

भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के एक जिले का नाम कोंडागाँव है। जो २४ जनवरी २०१२ को बस्तर जिले से अलग होकर छत्तीसगढ़ का एक अलग स्वतंत्र जिला बना है। यह जिला अपनी पारंपरिक शिल्पकला, विशेष रूप से बेल मेटल के लिए जाना जाता है। बेल मेटल या घंटा धातु तांबे और टिन की एक प्रकार से कांस्य मिश्र धातु है जो आमतौर पर ७८ प्रतिशत तांबा और २२ प्रतिशत टिन से बनी होती है। इस धातु का उपयोग घंटियाँ, झांझ और अन्य वाद्य यंत्रों के साथ–साथ बर्तन और मूर्तियों को बनाने के लिए किया जाता है। इसलिए इस जिले को छत्तीसगढ़ की शिल्प नगरी भी कहा जाता है।

इसी कोंडागाँव में बड़े कनेरा गाँव की रहने वाली पन्द्रह वर्ष की जूड़ो खिलाड़ी हेमवती नाग को वर्ष २०२४ में दिसम्बर माह की २६ तारीख को राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में आमंत्रित किया गया था। उन्हें देश की राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किया गया था। यह पुरस्कार बच्चों को दिया जाने वाला देश का सर्वोच्च पुरस्कार है।

आखिर ऐसा क्या किया था हेमवती नाग ने जो उन्हें यह पुरस्कार दिया गया ? हेमवती नाग नक्सल प्रभावित कोंडागाँव के आदिवासी परिवार की हैं। वह २०१९ का वर्ष था तब हेमवती ग्यारह वर्ष की थीं और कक्षा पाँच की छात्रा थीं। उस समय उन्होंने अपनी माता गलबे बाई नाग और पिता प्रेम नाग को खो दिया था। ऐसे में हेमवती की देखभाल आर्थिक रूप से कमजोर उनकी बूढ़ी दादी जैसे–तैसे करके कर रही थीं। ऐसे में बिना माता–पितावाली इस अनाथ बच्ची को आश्रय मिला स्वयंसेवी संस्था बालगृह बालिका कोंडागाँव में जिसे छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद् के द्वारा बीस मार्च २०१८ को खोला गया था।

कोंडागाँव के इस बालिका बालगृह केंद्र में रहने और खाने के अलावा और भी बहुत सारी सुविधाएँ सरकार की ओर से दी जा रही थीं। यह केन्द्र ऐसी बच्चियों के लिए था जो समाज में वंचित और निराश्रित थीं। चूँकि हेमवती के माता–पिता नहीं रहे थे और उसकी विपन्न दादी उसको वह सब सुविधाएँ नहीं दे सकती थी जिसकी उसे आवश्यकता थी इसलिए वह इस केंद्र में रहने के लिए उपयुक्त पात्र थी। लोगों ने प्रयास करके उसका प्रवेश इस केंद्र में करा दिया। यही नहीं पाँच भाई–बहनों में एक बड़े भाई–बहन जहाँ मेहनत मजदूरी करके अपनी गुजर–बसर कर रहे हैं वहीं हेमवती की छोटी बहन भी इसी बालिका गृह में जबकि भाई बालगृह में रह रहे हैं।

इस बालगृह केंद्र में बच्चों की देखभाल के साथ–साथ उन्हें टेबल–टेनिस, तीरंदाजी, जूडो आदि खेलों का प्रशिक्षण भी दिलाने की व्यवस्था है। बालगृह केंद्र से दूरी पर बने भारत तिब्बत सीमा पुलिस की ४१वीं बटालियन के केन्द्र पर उदय यादव व नारायण सोरेन द्वारा जूडो का बेसिक प्रशिक्षण बच्चियों को प्रदान किया जाता था। हेमवती नाग ने भी अपनी रुचि जूडो का प्रशिक्षण लेने में दिखाई। इससे पहले उन्होंने अपने संरक्षक माता–पिता के

रूप में अपना सब कुछ खो दिया था। यदि आईटीबीपी के इन योग्य प्रशिक्षकों द्वारा दिए गए जूडो के इस प्रशिक्षण के माध्यम से वह बहुत कुछ पा सकती थी। बालगृह केंद्र में उसे रहने के लिए अच्छी व्यवस्था और खाने के लिए पौष्टिक भोजन मिल ही रहा था। प्रशिक्षण के लिए योग्य गुरु मिले तो और भला किसी को क्या चाहिए। ऐसे में उनके सपनों की उड़ान के लिए पूरा आसमान खुला हुआ था इसलिए उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा दो घंटे सुबह और दो घंटे शाम को जाकर इस खेल को सीखने में पूरी तरह झोंक दी।

जब आप अपनी पूरी लगन मन और मेहनत से कोई काम करते हैं तो प्रकृति की शक्तियाँ भी आपके लक्ष्य प्राप्ति में आपकी सहायक बन जाती है। २०२० में हेमवती ने अपने जिस जूडो प्रशिक्षण की शुरुआत आईटीबीपी के निर्देशन में की थी उसके परिणाम तब आने शुरू हो गए जब हेमवती नाग ने जूडो की होने वाली प्रतियोगिताओं में भागीदारी करना शुरू किया।

इस खेल में उत्कृष्टता पाने के लिए उससे अपनी ओर से कोई कोर कसर नहीं उठा रखी थी। जल्दी ही वहाँ जूडो खेल के खिलाड़ियों की दस बालिकाओं की अच्छी खासी टीम बन गई। अगले ही वर्ष नवम्बर २०२१ में जब पंजाब के चंडीगढ़ में ओपन जूडो राष्ट्रीय टूर्नामेंट का आयोजन हुआ तो इसमें सब जूनियर श्रेणी के २८ किलोग्राम वर्ग में हेमवती ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में केंद्र की बालिकाओं ने अपनी क्षमताओं के बल पर सफलताएँ अर्जित कीं जिसमें हेमवती ने जहाँ स्वर्ण और ममता के कांस्य पदक को अपने कब्जे में कर लिया जबकि रंजीता और निर्मला को अपने वर्ग में सातवें स्थान से संतोष करना पड़ा।

यही नहीं हेमवती ने अगले वर्ष २०२२ में खेलो इंडिया की क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं में कांस्य पदक प्राप्त किया और राज्य स्तरीय घरेलू खेल प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक अपने नाम किया। अगले ही वर्ष २०२३ में भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय खेलो इंडिया टूर्नामेंट में जहाँ उन्होंने पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया और राष्ट्रीय

घरेलू खेल में कांस्य पदक पर अपना कब्जा जमाया।

२०२४ में क्षेत्रीय खेलो इंडिया प्रतियोगिता नासिक महाराष्ट्र में आयोजित हुई। जिसमें हेमवती ने चालीस किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त किया। इसी वर्ष के समाप्त होते–होते दिसम्बर माह में त्रिपुरा के अगरतला में आयोजित राष्ट्रीय घरेलू क्रीडा प्रतियोगिता के अंतर्गत जूडो खेल में हेमवती ने अपने अथक परिश्रम से रजत पदक अर्जित किया। इस तरह राज्य स्तर पर हेमवती ने ग्यारह पदक और राष्ट्रीय स्तर पर तीन पदक अर्जित कर लिए।

लगातार एक के बाद एक सफलताएँ प्राप्त कर हेमवती ने साबित कर दिया गया कि यदि आप लगन और मेहनत से लगातार सच्चे मन से प्रयास करते हैं तो सफलताएँ एक के बाद एक आपकी झोली में गिरती जाती है। हेमवती के यह प्रयास दर्शाते हैं कि प्रतिकूल परिस्थितियों में यदि आप लगन से निरन्तर जुटे रहें तो आप अविश्वसनीय परिणाम पा सकते हैं। हेमवती ने अपने जज्बे और मेहनत से विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए सपनों को पूरा करने का प्रयत्न कर जिसमें वे पूरी तरह से सफल हुईं हैं।

अपने बालिका गृह की प्रमुख मणि शर्मा के साथ दिल्ली में राष्ट्रपति से पुरस्कार लेने आई हेमवती की भेंट प्रधानमंत्री जी से भी हुई। प्रधानमंत्री जी ने जब हेमवती से उनकी उपलब्धि के बारे में पूछा तो हेमवती ने बताया कि– मैंने जूडो में राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मैडल जीता है। प्रधानमंत्री जी ने मुस्कुराते हुए कहा– ''फिर तो सब डरते होंगे तुमसे। कहाँ से सीखा है विद्यालय से?'' हेमवती ने बताया– ''मैंने आईटीबीपी कोच से सीखा है। उन्होंने फिर पूछा– ''अब आगे क्या सोच रही हो? हेमवती ने उत्तर दिया– ''मैं ओलम्पिक में गोल्ड जीतकर देश का नाम रोशन करना चाहती हूँ। उन्होंने फिर पूछा– अच्छा, इसके लिए मेहनत कर रही हो। हेमवती ने कहा– जी।

देश के प्रधानमंत्री जी के साथ हुई यह बातचीत हेमवती के जज्बों में कितनी ऊर्जा भरेगी और इसका क्या परिणाम निकलेगा। इसका उत्तर तो भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है। किन्तु इतना तो तय है कि यदि हेमवती ने इसके लिए दृढ़ संकल्प कर लिया तो उसके इस संकल्प की सिद्धि के लिए रास्ते भी अवश्य बन जाएँगे।

नन्हे मित्रो!

पूरे होंगे लक्ष्य असंभव, तय जो करें अगर हम।
चलते रहें निरन्तर पथ पर, जज्बा नहीं करें कम।
जहाँ रोशनी की मशाल हो, दिखता नहीं वहाँ तम।
मंजिल मिलने से रोके हमको, है किसका दम।।

– दिल्ली

बताओ तो जानें

– चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राज.)

नीचे के जल कुण्ड में मछलियों के झुण्ड में बिल्कुल एक जैसी दो जुड़वाँ डॉल्फिनें बताओं कौन से नम्बर की हैं?

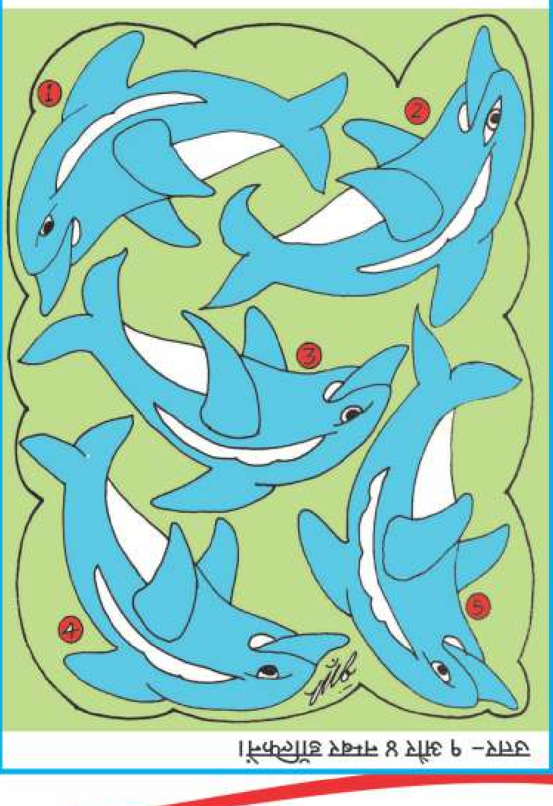

उत्तर– १ और ४ नम्बर डॉल्फिनें।

अनुशासन और समय प्रबंधन

– संकलनकर्ता
गोविन्द प्रसाद
कारपेंटर

काक चेष्टा बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम्।।

आदर्श विद्यार्थी के गुण एवं परीक्षा की योजना और तैयारी

✻ अनुशासन और समय प्रबंधन: समय पर स्कूल आना, समय पर काम पूरा करना और अपनी दिनचर्या का पालन करना।

✻ ईमानदारी: पढ़ाई में और परीक्षा में ईमानदार रहना, नकल न करना।

✻ मेहनत: आलस न करना और अपनी पढ़ाई के प्रति समर्पित रहना।

✻ जिज्ञासा: नई चीजें सीखने की उत्सुकता रखना और प्रश्न पूछने से

✻ सकारात्मक सोच: हर चुनौती का सामना सकारात्मक तरीके से करना।

✻ शिष्टाचार: सहपाठियों के साथ मिलनसार और सम्मान जनक व्यवहार करना।

✻ स्वच्छता और स्वास्थ्य: स्वयं को और अपने आसपास के वातावरण को साथ–सुथरा रखना, स्वस्थ रहना।

✻ लक्ष्य–उन्मुख: अपने लक्ष्यों को ध्यान में रखना और उन्हें प्राप्त करने के लिए मेहनत करना।

✻ आत्मनिर्भरता: आत्मनिर्भर बनना और दूसरों पर निर्भर रहना।

परीक्षा की योजना और तैयारी

✻ समय–सारिणी बनाएँ: प्रतिदिन पढ़ाई के लिए समर्पित समय निकालें और एक व्यवस्थित दिनचर्या का पालन करें।

✻ पाठ्यक्रम को समझें: पूरे पाठ्यक्रम को ध्यान से समझें और अपनी तैयारी को उसी के अनुसार डिजाइन करें।

✻ महत्वपूर्ण विषयों को प्राथमिकता दें:

✻ नोट्स बनाएँ: पढ़ते समय महत्वपूर्ण बिंदुओं के नोट्स तैयार करें ताकि आप आसानी से पुनरावृत्ति कर सकें।

✻ तैयारी जल्दी प्रारंभ करें: जितना शीघ्र हो सके, अपनी तैयारी प्रारंभ कर दें, जिससे बाद में जल्दबाजी न हो।

✻ पिछले वर्षों के प्रश्न–पत्रों का अभ्यास करें: परीक्षा पैटर्न को समझने और महत्वपूर्ण प्रश्नों को जानने के लिए पिछले वर्षों की त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, प्री–बोर्ड एवं वार्षिक परीक्षा के प्रश्न–पत्रों को हल करें।

✻ नियमित अभ्यास करें: सफलता के लिए नियमित अभ्यास करना बहुत ही।

✻ पुनरावृत्ति पर ध्यान दें: जो कुछ भी हमने पढ़ा है, उसकी नियमित रूप से पुनरावृत्ति करते रहना चाहिए।

✻ कमजोर पहलुओं पर काम करें: उन विषयों और अध्यायों पर अधिक ध्यान दें जिनपें आपको कठिनाई होती है।

✻ स्वास्थ्य और मानसिकता: स्वस्थ भोजन और पर्याप्त नींद लें। स्वस्थ शरीर और दिमाग के लिए पौष्टिक भोजन करें और पर्याप्त नींद लें।

✻ तनाव कम करें: शांत रहने के लिए योग, आसन, ध्यान या गहरी सांस लेने जैसी गतिविधियों

को अपनाएँ।

※ **मनोरंजन सीमित करें:** पढ़ाई के दौरान मनोरंजन को सीमित रखें और मोबाइल फोन, टी. वी. जैसे उपकरणों से दूरी बनाएँ रखें।

※ **सकारात्मक रहें:** आत्मविश्वास बनाए रखें और सकारात्मक सोच के साथ तैयारी करें।

बोर्ड परीक्षा में ये ५ गलती न करें

※ **समय प्रबंधन न करना:** परीक्षा के समय सही से टाइम मैनेजमेंट न करने से प्रदर्शन खराब हो सकता है, क्योंकि आप या तो कठिन प्रश्नों में अधिक समय लगा देते हैं या फिर आसान प्रश्नों को बिना देखे छोड़ देते हैं।

※ **रटना, समझना नहीं:** किसी भी टॉपिक को बिना समझने रटना सबसे बड़ी गलती है। इससे आप उसे ठीक से लिख नहीं पाते, विशेषकर यदि प्रश्न थोड़ा अलग प्रकार से पूछा गया हो।

※ **परीक्षा पैटर्न को अनदेखा करना:** परीक्षा के पैटर्न को न समझना, किस टॉपिक से कितने प्रश्न पूछे जाएँगे, इसे न जानना और मार्किंग स्कीम को न समझना भी एक बड़ी गलती है।

※ **परीक्षा के दिन की गलतियाँ:** परीक्षा में देर से पहुँचना, उत्तर-पुस्तिका में प्रश्न संख्या न लिखना जैसी गलतियाँ आम हैं।

※ **पुनरावृत्ति न करना:** जो पढ़ा है, उसे समय-समय पर दोहराना (रिवाइज करना) बहुत आवश्यक है। रिवीजन न करने से आप पढ़ी हुई चीजें भूल सकते हैं।

इन गलतियों से कैसे बचें

※ पढ़ाई को समझने पर ध्यान दें, रटने का प्रयत्न न करें।

※ पिछले वर्षों के प्रश्न-पत्रों को हल करें, इससे पैटर्न और प्रश्नों की प्रकृति को समझने में सहायता मिलेगी।

※ एक समय-सारणी बनाकर पढ़ाई करें।

※ रिवीजन के लिए अलग से समय निकालें।

※ स्वस्थ जीवन शैली अपनाएँ।

परीक्षा के दिन

※ परीक्षा केंद्र पर समय से पहले पहुँचे।

※ उत्तर-पुस्तिका में अपनी जानकारी ठीक से भरें।

※ पहले उन प्रश्नों को हल करें जिनका उत्तर आपको अच्छी तरह आता है।

※ उत्तर पुस्तिका की परीक्षा के अंतिम १०-१५ मिनट में अवश्य जाँच करें।

- छापीहेड़ा, राजगढ़ (म. प्र.)

सबसे सगी परीक्षा

नहीं परीक्षा भय का अवसर
यह तो एक महोत्सव।
जो हमने अब तक सीखा वह
बतलाने का उत्सव।।
करें प्रमाणित गुरुजन जिसको
सारा जग वह माने।
कितने सफल सीखने में हम
मूल्यांकन से जानें।।
कहाँ कमी है जान सके तो
उसे कर सकें पूरी।
कदम-कदम चल सही दिशा में
कटे लक्ष्य की दूरी।।
अगली कक्षा में जाने का
अवसर यही परीक्षा।
प्रश्न-पत्र हैं मित्र हमारे
सबसे सगी परीक्षा।।
अगर परीक्षा से घबराए
जीवन में क्या पाएँ?
परी परीक्षा जादूगरनी
हमको भविष्य दिखलाए।

इच्छा
चित्रकथा-
तीन बच्चों ने लावारिस पड़ी एक बोतल खोल दी..
मैं जिन्न हूं बच्चों..
तुमने मुझे सालों की कैद से आजाद किया है तुम अपनी एक-एक इच्छा बताओ मैं उसे पूरी कर दूंगा..
मुझे परी बना दो..
मुझे राजकुमार बना दो..
और तुम्हारी इच्छा?
इन दोनों को पहले जैसा ही बना दो..

वीर सिपाही

– गोविन्द भारद्वाज

हम भारत के वीर सिपाही,
सीमा के रखवाले हैं।
हिम चोटी पर डटे हुए हम,
ओढ़े बर्फ दुशाले हैं।।

दूर-दूर तक दुश्मन पर हम,
दृष्टि गड़ाए रहते हैं।
अपनी आँखों पर दूरबीन,
सदा लगाए रहते हैं।।

पंछी तक पर मार न पाए,
ऐसा अपना पहरा है।
धरा नहीं ये माता अपनी,
नाता इससे गहरा है।।

जान हथेली पर रखकर हम,
अपनी बंदूक उठाते हैं।
बढ़े कदम जो दुश्मन के तो,
उनको मार भगाते हैं।।

शान तिरंगे की बढ़े सदा,
चाह यही नित रखते हैं।
अपना सुख पाने से पहले,
भारत का हित रखते हैं।।

सागर हो या मरुस्थल कहीं,
अपने वतन से प्यार हो।
प्राण हमारे हो न्यौछावर,
यही जीवन का सार हो।।

– अजमेर
(राजस्थान)

भारत के वीर सिपाही

– श्यामा देवी गुप्ता 'दर्शना'

हम भारत के वीर सिपाही,
नन्हें–नन्हें प्यारे–प्यारे।
लिए हौसला हम चलते हैं,
धरते पग ये न्यारे।।

उम्मीदों की तीन के छतरी,
आस लगाए गहरी।
सारा देश हमारा अपना,
हम हैं इसके प्रहरी।।

मातृभूमि की सदा समर्पित,
हम जमीन के तारे।

लिए तिरंगा हाथों में हम,
जनगणमन सब गाते।
भारत माता के चरणों में,
अपना शीश झुकाते।।

नन्ही बगिया के हम माली,
इस पर सब कुछ वारें।।

नहीं शहीदों के सपनों को,
मिटने अब हम देंगे।
देश हमारा है बलिदानी,
शपथ सभी हम लेंगे।।

सर्व पंथ समभाव रहे बस,
यही लगाएँ नारे।।

– भोपाल (म. प्र.)

नहुष द्वारा ऋषियों का अपमान

– मोहनलाल जोशी

राजर्षि नहुष ने बहुत पुण्य कार्य किए थे। अपने पुण्य कार्यों से वह स्वर्ग का राजा बन गया। इन्द्र डर के कारण कमल नाल में छिप गया।

नहुष का अभिमान बढ़ गया। उसने इन्द्र की पत्नी शचि को कहा– ''सभी देवता मेरी सेवा करते हैं। तुम भी मेरी सेवा में आओ।''

शनि ने कहा– ''तुम ऋषियों से जुड़ी हुई पालकी में बैठकर मेरे महल तक आओ। तब मैं तुम्हारी सेवा करूँगी।''

नहुष ने पालकी मंगवायी। वह पालकी में बैठ गया। अनेक ऋषि पालकी उठा कर चलने लगे। वे धीरे–धीरे चल रहे थे। नहुष ने अगस्त्य ऋषि के लात मारी। उनसे कहा– ''जल्दी चलो। अगस्त्य ऋषि को बहुत क्रोध आया। उन्होंने नहुष को शाप दिया। तुम अभी पृथ्वीलोक में गिर जाओ। तुम अजगर बन कर एक स्थान पड़े रहोगे। तुम्हारी मुक्ति तब होगी जब तुम्हारा ही कोई वंशज तुम्हारे प्रश्नों का सही उत्तर दे देगा।

भीम का अजगर से युद्ध

भीम में दस हजार हाथियों का बल था। वनवास के समय से वह घने जंगलों में अकेला शिकार करने चला जाता था। एक बार उसे घने जंगल में एक विशालकाय अजगर मिला। भीमसेन अजगर से युद्ध करने लगा। अजगर ने अपनी पूँछ से भीम को जकड़ लिया। भीम छटपटाने लगा। लेकिन वह अजगर से नहीं सका।

युधिष्ठिर ने सोचा– आज भीम शिकार करके अभी तक नहीं आया। वे भीम को खोजते–खोजते अजगर के पास आए। युधिष्ठिर ने कहा– ''मेरे भाई को छोड़ दो।''

अजगर ने कहा– ''मैं तुम्हारा पूर्वज नहुष हूँ। ऋषि के शाप से यहाँ पड़ा हूँ। मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। नहीं तो मैं भीम को खाऊँगा। मैं बहुत भूखा हूँ।

युधिष्ठिर धर्मराज का अवतार थे। उन्होंने अजगर के सभी प्रश्नों का सही उत्तर दे दिया। अजगर को शाप से मुक्ति मिल गई। उसने भीम को छोड़ दिया। दोनों भाई प्रसन्नता लिए डेरे पर आ गए।

– बाड़मेर (राजस्थान)

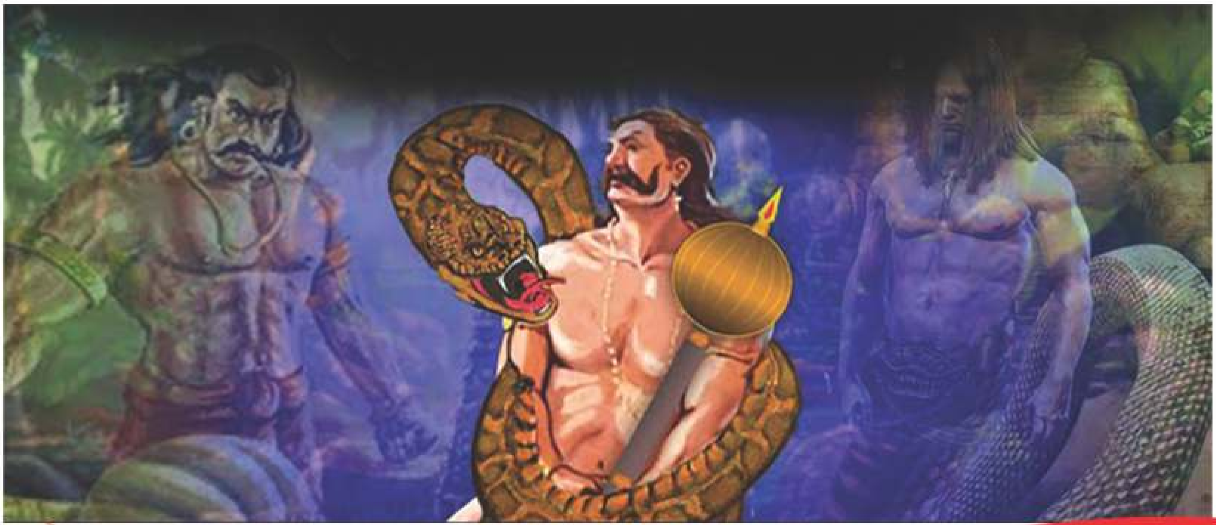

दया का फल

– पवन पहाड़िया

चयन को बचपन से ही पशु–पक्षियों से प्यार था। उसको जब भी अवसर मिलता वह गाय, बिल्ली, कुत्ता, बछड़ा, बकरी या कहने का मतलब बिना डरे वह हर किसी के साथ खेलने लग जाता। आज तक उसको किसी ने काटा नहीं और न ही किसी ने कोई चोट पहुँचाई, इसलिए वह निडरता के साथ उन सब के बीच खेलता रहता। उसके घर में एक गाय थी जिसका बछड़ा उसको बहुत अच्छा लगता था। वह उससे इतना प्यार करता था कि माँ की नजरें बचाकर यह अपना दूध का कटोरा भी बछड़े को पिला देता था। उसको जब–जब भी ऐसा अवसर मिलता वह भूखा रहकर भी अपना दूध बछड़े को पिला देता।

उसकी माँ को उसने कभी भनक नहीं लगने दी कि वह अपने दूध का कटोरा बछड़े के हवाले कर देता है। उसको ऐसा करने पर भूख तो सताती पर वह इस संतुष्टि के चलते थोड़ी बहुत भूख सहन करना भी सीख गया था।

वह जब–जब भी बछड़े को दूध पिलाता तो गाय की नजर अवश्य इस पर पड़ती थी, गाय को तो चयन के ऐसे प्रेम व भोलेपन पर शिवा आशीर्वाद के और करना ही क्या आता था। इस बात से चयन एकदम अनभिज्ञ था कि उसको इस तरह दूध पिलाते गाय देखती भी है। वह तो बस इतना ध्यान रखता था कि कहीं माँ नहीं देख ले।

बछड़ा जब भी खुला होता वह चयन के पास आकर खड़ा हो जाता तथा अपनी जीभ से उसको चाट–चाटकर अपनी तरफ से प्यार जताता तो चयन मन ही मन बड़ा खुश हो जाता।

चयन के पिताजी व माँ दोनों ही सरकारी नौकरी पर थे, इसलिए वे रोज सुबह दफ्तर जाते तब चयन को उसकी दादी के भरोसे छोड़ कर जाते थे।

चयन दिन भर दादी के साथ खेलता, जब दादी सो जाती तो चयन उठकर बछड़े के पास आ जाता व उसके साथ खेलता रहता। एक दिन की बात है चयन जब बछड़े के साथ खेल रहा था तथा खेलते –खेलते ही उसको वहीं पर नींद आ गई। गाय ने जब चयन को इस तरह कच्चे आँगन में ही सोया देखा तो गाय की भी ममता जाग उठी। उसने सोचा– ''इसको तो नींद आ गई, दादी भी सोई हुई है। अब में भी यदि सो जाऊँगी तो हो सकता है कोई जीव जंतु इसको

किसी तरह का कोई नुकसान ना पहुँचा दे। ऐसा सोचकर गाय ने भी नींद से बचने के लिए जुगाली शुरू कर दी तथा नजर चयन पर ही रखे हुए थी।

संयोगवश उसी समय एक बड़ा–सा विषधर घर के अंदर आ गया तथा इधर–उधर रेंगते हुए सीधा चयन की तरफ बढ़ने लगा, चयन तो इन सब अनभिज्ञ गहरी नींद में सोया हुआ था। गाय ने जोर–जोर से रंभाना शुरू किया पर अंदर सोई दादी भी नहीं जागी तथा चयन भी नहीं जागा। गाय के रंभाने से एक बार तो अजगर भी थोड़ा ठिठका पर वह तो पुन: चयन की तरह बढ़ने लगा, गाय ने आने वाले खतरे को भाँपते हुए अपने गले में बंधी रस्सी को तोड़ना चाहा पर रस्सी मजबूत होने के कारण टूटी नहीं। गाय ने उछल–कूद मचानी शुरू कर दी व खींच–तान से आखिर रस्सी टूट तो गई पर इस उछल–कूद में गाय का गला थोड़ा अवश्य जख्मी हो गया पर गाय ने इसकी परवाह किए बिना ही सीधा विषधर पर अपने सींगों से हमला कर दिया। विषधर भी मजबूत था तथा अपने हाथ आते भोजन को कैसे छोड़ सकता था पर गाय ने तो जैसे ठान ही लिया था कि इसका अंत तो करना ही है।

काफी देर तक दोनों में जंग चलती रही आखिर विषधर को हारना ही पड़ा, तब तक चयन भी जाग गया तथा सामने मरा पड़ा विषधर देखकर चिल्लाने ही वाला था कि गाय ने ही मुझे बचाने के लिए इसको परलोक पहुँचाया है तथा स्वयं का गला भी जख्मी करवाया है।

इतना समझते ही चयन गोमाता को सहलाने लग गया, गाय ने भी चयन की पशु–प्रेम की भावना को मानो यह कहते हुए सहलाना शुरू किया कि हम पशु अवश्य हैं किन्तु हमारे में भी भगवान ने इतना ज्ञान तो अवश्य डाला है कि हम भी किसी के उपकार को समझें तथा समय आने पर उसको चुकाने में कभी पीछे नहीं हटें।

– डेह नागौर (राजस्थान)

छ: अँगुल मुस्कान

पूरी रेलगाड़ी में सबसे अधिक शोर इंजन का होता है, एक यात्री ने दूसरे से कहा।

''इसका मतलब है आपने कभी महिलाओं का डिब्बा नहीं देखा।'' दूसरा यात्री बोला।

*****

मरीज डॉक्टर साहब, लगभग एक वर्ष पूर्व मैं आपके पास निमोनिया के उपचार के लिए आया था। आपने उस समय मुझे नहाने के लिए मना किया था।

डॉक्टर– हाँ! कुछ याद तो आ रहा है। फिर अब क्या हो गया है?

मरीज– जी! मेरी पत्नी मुझे नहाने के लिए तंग कर रही है। क्या मैं नहा लूँ?

*****

पर्वतारोहण पर जाने वाले लोग आपस में एक–दूसरे को रस्सी से बाँधकर क्यों रखते हैं।

ताकि उनमें से किसी को अक्ल आ जाए तो वह चुपचाप घर न भाग सके।

*****

'आपने कौन–सी दवा लिख दी है। किसी भी दुकान में ही मिली।' रोगी ने शिकायत करते हुए कहा।

डॉक्टर बड़े ध्यान से दवाई के पुर्जे को देखते हुए गंभीर स्वर में बोला– 'बैठिए। पहले यह बताइए कि आपको तकलीफ क्या थी?'

*****

मंच पर कविता पाठ करते हुए कवि महोदय ने 'हुटिंग' कर रहे श्रोताओं को चुनौती देते हुए कहा 'मैं ऐसी बकवास सुनने का आदी हूँ, बैठूँगा नहीं।'

एक आवाज आयी, 'लेकिन हम ऐसी बकवास सुनने के आदी नहीं हैं, कृपया हमें बैठने दीजिए।

क्या गायब?

दूसरे चित्र में पहले की नकल करते समय बनाने से क्या रह गया है? बूझो.

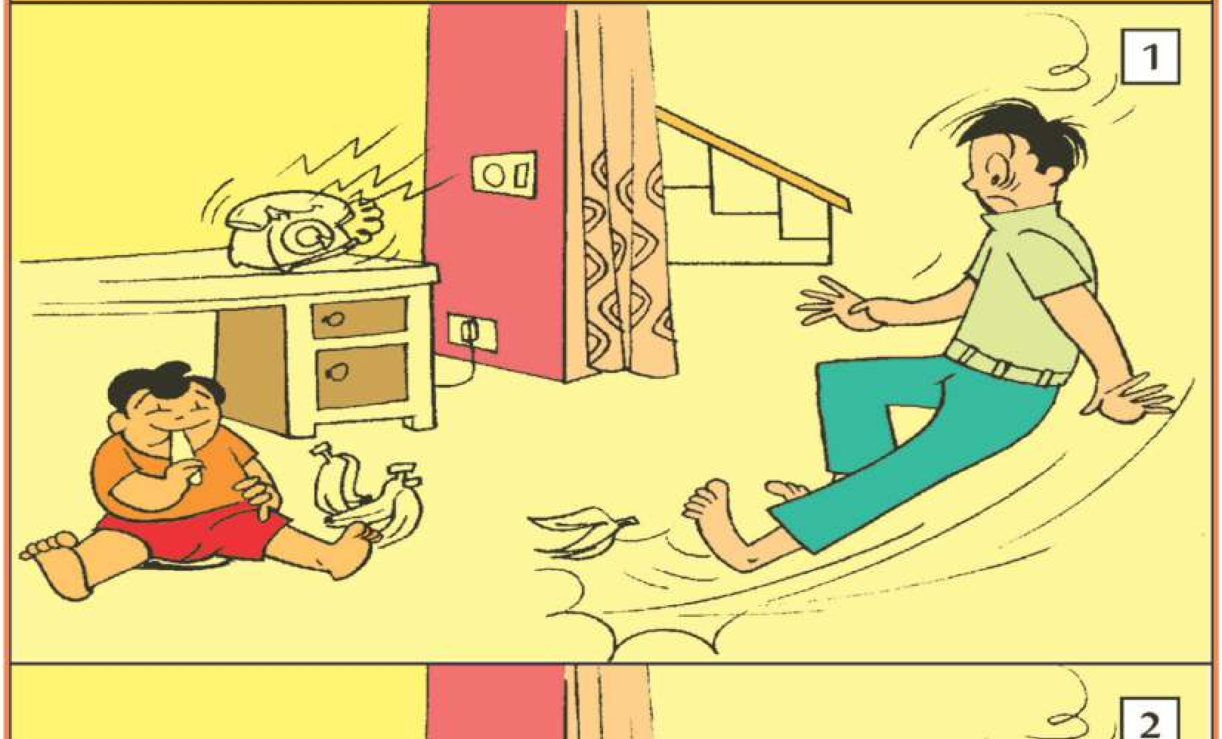

–संकेत

दूसरे चित्र में नहीं है 1. पर्दे पर बने खाने 2. फोन का तार 3. केला 4. मेज की दराज का हत्था 5. गिरते आदमी का बेल्ट 6. पीछे की सीढ़ियां 7. लड़के की भौंहें 8. स्विच

गगन स्लेट है, पक्षी अक्षर

– अमिताभ शंकर राय चौधरी

हिमाचल के किन्नौर जिले के कल्पा में एक लड़की रहती है, शालिनी। दोपहर में जब उसकी माँ सो रही थी और वह अपने डॉगी स्नोवी के साथ खेल रही थी तो एक तितली आकर बालकनी की रेलिंग पर बैठ गई, बाहर निकल कर देखो। यह हिमालय, यह आकाश, ये चिलगोजा देवदार के पेड़–सभी एक–एक शिक्षक हैं। इनसे बहुत कुछ सीख सकती हो। आओ तो सही।'

'बाहर कदम धरते ही सामने के चीड़ के पेड़ से भुनभुनाते हुए एक गिलहरी उतर कर शिकायत करने लगी, यह तो गजब हो गया। जाड़े में खाने के लिए मैंने चालीस बादाम इस पेड़ पर छिपा कर रखे थे, किन्तु आज देख रही हूँ उसमें से बारह गायब हैं।

शालिनी को आश्चर्य हुआ, 'गिलहरी रानी! तुम्हें घटाना आता है?'

पहाड़ पर मकान बनाने के लिए माल ढोने वाले एक टट्टू बगल से जा रहा था। वह रुक कर कहने लगा, 'इतना मैथ तो मुझे भी आता है। मेरी पीठ की एक तरफ ज्यों बीस ईंटें हो जाती हैं तो मैं रज्जो भाई से कह देता हूँ, 'अब दूसरी ओर लादो। एक तरफ अधिक लादोगे तो बैलेंस बिगड़ जाएगा। गिर जाऊँ तो पहाड़ पर डॉक्टर कहाँ मिलेंगे? मैं एक बीस दो बीस करके गिनती कर लेता हूँ।'

स्नोवी खोजी कुत्ते की तरह भौंकने लगा, 'किन्तु इसके बादाम किसने चुराएँ?'

पहाड़ की खोह में बैठा उल्लू खूसट बोला, 'मुझे एक चूहा खाने को दो तो मैं चोर का नाम बता दूँ।'

'पहले काम, फिर दाम।' स्नोवी को गुस्सा आ गया।

'तो सुनो। करकट कौए को मैंने उस पेड़ पर बैठते देखा था।'

'पहले उससे पूछ लें फिर तुम्हे तुम्हारी फीस भी मिल जाएगी।' कहते हुए शालिनी को कुछ याद आ गया, 'किन्तु तुम्हें तो दिन में कुछ दिखता नहीं। तुमने करटक को कैसे देख लिया?'

'वो तो मेरी आँखों के पर्दे में उजाले में देखने वाले 'कोन' कम हैं, इसलिए। किन्तु कम प्रकाश में देखने के लिए रॉड तो काफी हैं। दिन के प्रकाश में हमारी पुतलियाँ भी छोटी हो नहीं पाती। दिन में मैं सनग्लास लगा लेता हूँ तो मुझे सब कुछ दिखता है।'

'अरे बापरे! तुम तो जीव विज्ञान का क्लास लेने लगे।' शालिनी सबको लेकर चिल्लाते हुए जंगल के रास्ते आगे निकल गयी, 'करटक! तुम कहाँ हो? तुमने गिल्ली गिलहरी के बादाम चुराए हैं?'

इतने में जंगल के फूलों पर मँडराते हुए मधुमक्खियाँ उधर आ गईं। वे बोलीं, 'अजी, इंसान भी तो हमारा शहद चुराता है। हम अपनी मेहनत से छत्ते बनाते हैं और वे उसे काट ले जाते हैं। शहद निकालकर खाते हैं, बेचते हैं। छत्ते के मोम से मोमबत्ती बनाते हैं।'

शालिनी को लगा बात तो सही है! उसे भी शहद लगाकर पराठे खाने में बड़ा आनंद आता है। बोली, 'तुम लोग फूलों से शहद एकत्रित करती हो किन्तु हमें फूलों पर शहद क्यों नहीं दिखते?'

सुनते ही सारी मधुमक्खियाँ हँस पड़ी, 'यह तो वनस्पति शास्त्र का मामला है। फूलों के बीच एक सुराही जैसी चीज होती है उसी में मधु रहता है। हम उसे चूस कर उड़ जाते हैं।'

'तब तो तुम लोग भी फूलों का शहद चुराते हो।'

'उसके बदले हम भी तो पराग कणों को एक फूल से दूसरे फूलों तक फैलाते हैं। जो फूलों में घुसते समय हमारे पंखों पर चिपक जाते हैं।'

इतने में माँ बुलाने लगी, 'शालू! जल्दी घर वापस आ। बारिश होने वाली है।'

'भौं, भौं, जरा ऊपर तो देखो।' स्नोवी ने शालू को डाँटा।

आकाश में काली घटाएँ घिर आयी थीं। टप-टप बूँदें गाने लगीं, 'बारिश तो एक बहाना है/ अभी नहीं घर जाना है।'

गिल्ली बोली, 'कहीं मेरे बच्चे भींग न जाएँ। बादल गरजने से वे डर जाएँगे।'

गड़गड़ाते हुए बादल कहने लगे, 'अरे! हम लोग बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर से यहाँ तक पानी लाते हैं और देखो आदमी कैसे उसे बर्बाद करता है। शाखा नदियों से पम्प करके पानी खींच ले रहे हैं तो नदियों की धारा सूख रही है। शहरों में माफिया वाले बिजनेस के चक्कर में कितना पानी बर्बाद करते हैं।'

'बहुत हो गया भूगोल का क्लास। कोई बता सकता है कि करटक कौआ कहाँ मिलेगा?'

'मैं तो पानी से बचने के लिए इस देवदार पर बैठा हूँ? मुझे क्यों ढूँढ़ रहे हो?' काँव-काँव करते हुए करटक बोला।

'तुमने मेरे बादाम चुराए हैं। खूसट उल्लू ने देखा है।' गिल्ली बोली।

'तभी उसे सब उल्लू कहते हैं। मैं ने तुम्हारे बादाम नहीं चुराए।'

हवा में खनकते हुए चिलगोजा की पत्तियों से आवाज निकली, 'इसी तरह जंगल में आग लगने पर केवल मेरी पत्तियों के सर दोष मढ़ते हैं। जबकि इंसान ही अपने स्वार्थ और गैरजिम्मेदारी से जंगल में आग फैलाते हैं। मेरी पत्तियों से तो अब बिजली पैदा करने

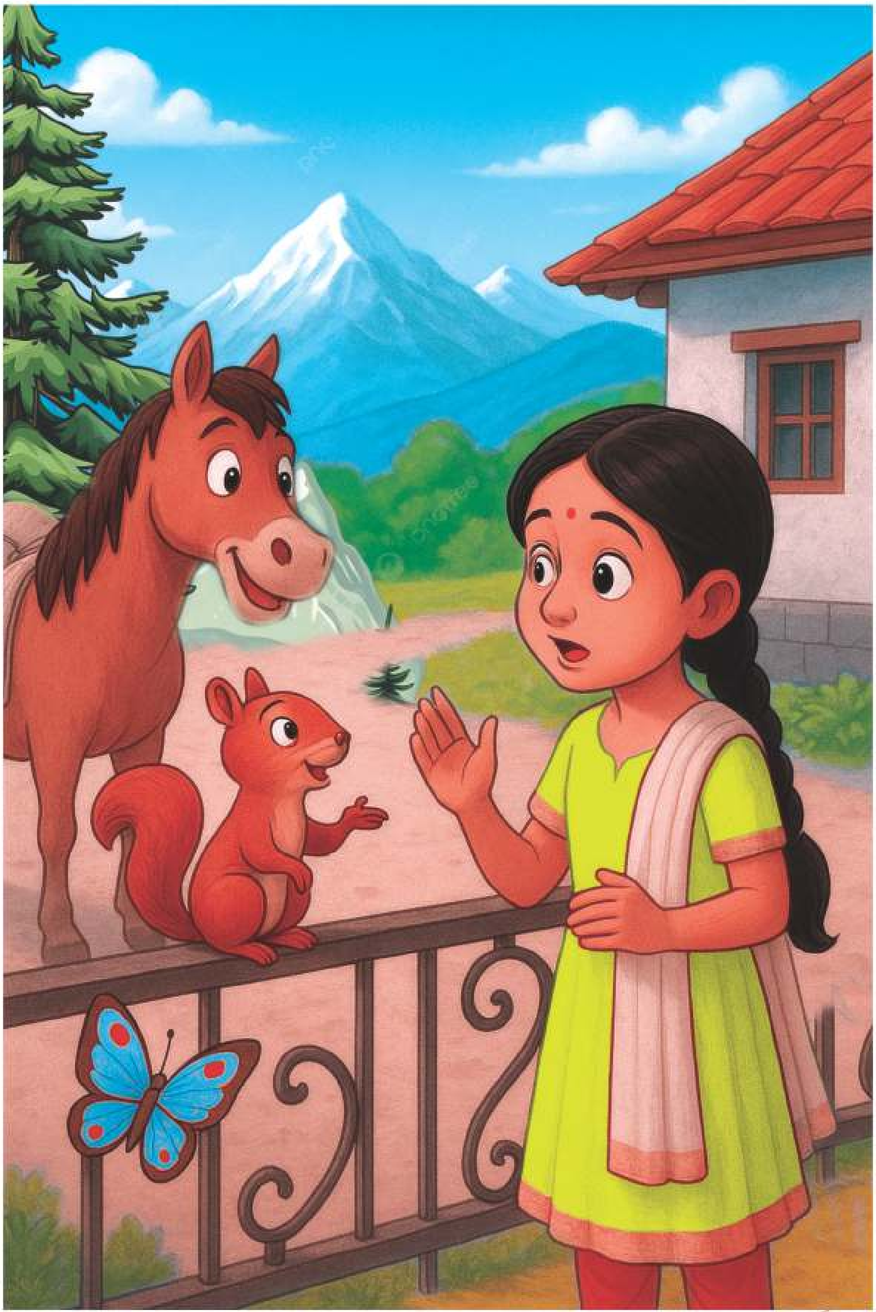

का प्रयत्न हो रही है। मेरा एक सुझाव है।'

सबने पूछा, 'क्या?'

'जिस पेड़ पर गिल्ली के बादाम रखे हैं तुम लोग उसके तने पर अच्छी तरह बिच्छूघास की डाली और पत्ती बाँध दो, फिर देखो कल सबेरे क्या होता है।'

वही हुआ। जिस पेड़ पर बादाम छुपा कर रखा गया था, उसके तने पर और ऊपर पत्तियों के बीच में गिल्ली और दूसरे गिलहरियों ने मिलकर ढेर सारे बिच्छूघास की लतर लगा दी। फिर सब अपने-अपने घर चले गए।

दूसरे दिन सुबह होते ही सबने देखा 'अरे बापरे! माँ रे! मैं मरा।' चिल्लाता हुआ कोई पूरे कल्पा का चक्कर काट रहा है। यह हरिआ बन्दर था। उसके चेहरे लाल हो गए थे। उस पर सूजन थे। वह पागलों की तरह अपना बदन खुजला रहा था। कभी पेड़ पर चढ़ जाता, तुरन्त नीचे उतर आता।

शालिनी ने पूछा, 'तुम्हें क्या हो गया?'

'वो बिच्छूघास मेरे शरीर पर लगने से मैं रात भर खजुआता रहा। लग रहा है मर जाऊँगा।'

स्नोवी बोला, 'जैसी करनी वैसी भरनी।'

गिल्ली गुस्सा गई। बोली, 'मेरे बादाम वापस कर।'

'खा लिया है जिसको/कैसे वापस करूँ उसको?'

शालिनी की माँ बुलाने लगी, 'हरिआ को लेते आ। उसके बदन पर कपूर और नारियल का तेल लगा दूँ। खुजली फुर्र हो जाएगी।'

शालू बोली, 'अरे बापरे! अब तो यहाँ मेडिकल कॉलेज भी खुल गया है।'

हँसते हुए हरिया को लेकर सब घर चले।

- जयपुर (राजस्थान)

बौद्धिक क्रीडा

भूल भुलैया

- चाँद मोहम्मद घोसी

मदारी श्याम सिंह अपना डमरू कहीं पर रख कर भूल गया। डमरू कहाँ पर है? यह उसे पता नहीं।

प्रिय मित्रो! आप नीचे रखे डमरू के पास श्याम सिंह को पहुँचाइए ताकि डमरू बजाकर करतब दिखा सके।

भूल भुलैया में आपको आनन्द आएगा।

- मेड़ता सिटी (राजस्थान)

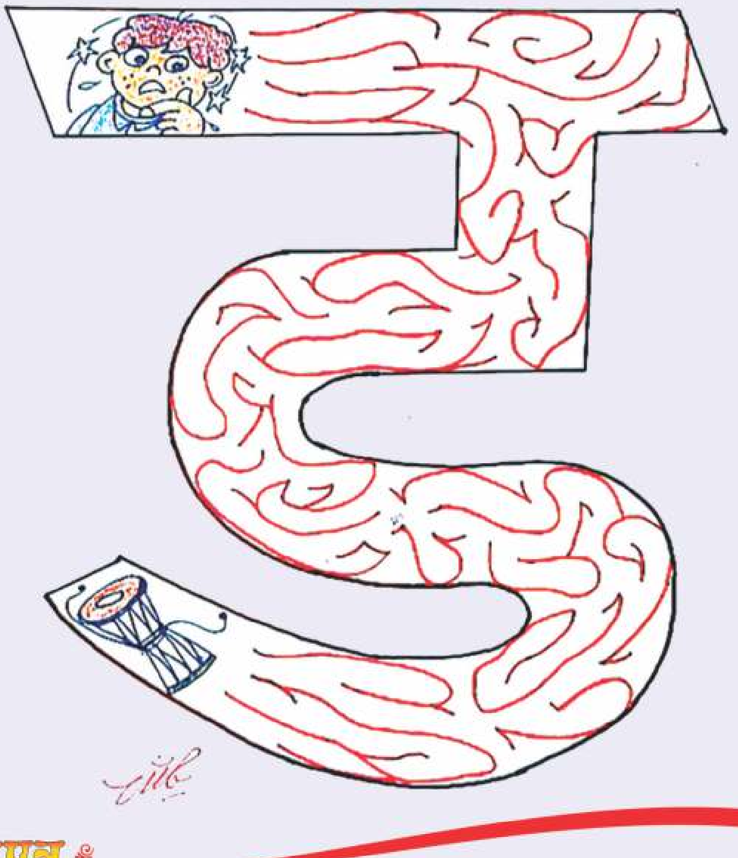

भली-भली सुखदाई धूप

- राम नरेश 'उज्ज्वल'
लखनऊ (उ. प्र.)

जाड़े में जब आई धूप।
हमको लगी रजाई धूप।।
सूरज दादा ने ऊपर से।
गरम-गरम पहुँचाई धूप।।
उजली-उजली चाँदी जैसी।
सबके मन को भाई धूप।।
बच्चों जैसी अंदर-बाहर।
घर-घर में इठलाई धूप।।
कभी निकलती फीकी-फीकी।
मुरझाई-मुरझाई धूप।।
थर-थर-थर-थर काँप रही खुद।
सकुचाई-सकुचाई धूप।।
बर्फीली ठंडी में लगती।
भली-भली सुखदाई धूप।।

धरती पर नंगे पैर चलना

– डॉ. मनोहर भण्डारी

कुछ देर धरती पर नंगे पैर भी चलें– पृथ्वी और पैरों के बीच ऊर्जा (प्राण) प्रवाह को सुगम करने के लिए एकाध घंटा नंगे पैर रहें। इससे एंटीऑक्सीडेंट बढ़ते हैं, इन्फ्लेमेशन कम होता है, नींद में सुधार होता है, इम्यून तंत्र सशक्त होता है। लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या में वृद्धि होती है। थकान कम हो जाती है। ऊर्जा का स्तर बढ़ जाता है। उपचार की गति बढ़ जाती है और दर्द कम हो जाता है। **डॉ. गेटन शेवेलियर** ने अपने अध्ययन **'द इफेक्स ऑफ ग्राउंडिंग द ह्यूमन बॉडी ऑन मूड'** में बताया है कि इससे मूड में उल्लेखनीय सुधार होता है। हॉग आर्थोपेडिक इंस्टीट्यूट के अस्थि रोग विशेषज्ञ **डॉ. जोनाथन कपलान** और अन्यों के अनुसार इससे हमारी चाल का पैटर्न बरकरार रहता है। शारीरिक संतुलन अच्छा रहता है, माँसपेशियाँ सशक्त होती हैं। पैर के तलवे का आर्च स्वस्थ रहता है। **जर्नल ऑफ इनवायर्नमेंटल एण्ड पब्लिक हेल्थ** में प्रकाशित आलेख के अनुसार नींद में सुधार होता है, दिन–रात के कार्टिसोल की लय सामान्य हो जाती है, दर्द कम हो जाता है, रक्त का लसलसापन (विस्कोसिटी) कम हो जाती है। तनाव कम हो जाता है। सिम्पेथेटिक तंत्रिका तंत्र के स्थान पर पैरा सिम्पेथेटिक तंत्र की सक्रियता बढ़ जाती है। घाव भरने में तेजी आ जाती है।

स्वच्छता– अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता पहली सीढ़ी है। स्मरण रहें, एक ग्राम धूल में औसतन दो–तीन हजार धूल कीट (डस्ट माइट) होते हैं। इनके विष्ठा में एलर्जन होते हैं, जो अस्थमा, राइनाइटिस, त्वचा रोग उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं। इसलिए घर की नियमित सफाई अत्यन्त आवश्यक है। कालीन, पर्दें, चटाई, बिस्तर, फर्नीचर के नीचे और पीछे की धूल इन कीटों के लिए श्रेष्ठ स्थान होते हैं। घर के फर्नीचर को साप्ताहिक रूप से गीले और सूखे कपड़े से साफ अवश्य करें।

अपनी भाषा, अपना स्वास्थ्य– भारतीय भाषाओं और संस्कृत का मनुष्य के समग्र विकास से गहरा संबंध है। नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली के एक शोध के अनुसार भारतीय भाषाओं को पढ़ने से मस्तिष्क के दोनों गोलार्द्ध अधिक सक्रिय होता है। प्रतिदिन संस्कृत के कम से कम दस श्लोक स्वयं भी अवश्य पढ़ें और अपने बच्चों को तदर्थ प्रशिक्षित करें।

– इन्दौर (म. प्र.)

स्पेशल गैलरी

चित्रकथा: देवांशु वत्स

बेस्वाद पिज्जा

– संजीव जायसवाल 'संजय'

धूप से भरी दोपहर थी और सड़क पर धूल उड़ रही थी। एक पुरानी–सी मोटरसाइकिल पर, कंधे पर डिलीवरी बैग लटकाए, सुधांशु तेजी से चला जा रहा था। सिर पर हेलमेट, चेहरे पर पसीना, किन्तु आँखों में मेहनत और ईमानदारी की चमक थी। वह शहर के 'हॉट सिजल पिज्जा कॉर्नर' में डिलीवरी बॉय का काम करता था। महीने के मामूली वेतन से वह अपने छोटे भाई हिमांशु की पढ़ाई और घर का खर्च चलाता था।

सुधांशु की माँ को गुजरे तीन वर्ष हो चुके थे। पिता भी अब बीमार रहते थे। घर का सारा बोझ उसके कंधों पर था, पर शिकायत उसके चेहरे पर कभी नहीं झलकती थी। हर बार पिज्जा लेकर निकलते हुए वह प्रार्थना करता, ''भगवान! डिलीवरी समय पर करवा देना, कोई गड़बड़ न होने पाए।''

उस दिन भी वह एक ग्राहक के यहाँ पिज्जा देने जा रहा था। घड़ी में तीन बजकर पैंतालीस मिनट हो रहे थे। उसे ४ बजे तक पिज्जा डिलीवर करना था। तभी अचानक सामने छः सात–साल का एक बच्चा सड़क पर आ गया। दूसरी ओर से तेज रफ्तार में आ रही कार बस कुछ ही कदम दूर थी। बच्चे को बचाने के लिए सुधांशु ने झटके से ब्रेक दबाया और बाइक मोड़ दी।

चर्ररर्र! की आवाज के साथ बाइक फिसली और सुधांशु धड़ाम से सड़क पर जा गिरा। उसकी कोहनी छिल गई थी और बाजू से खून निकल आया था। मगर बच्चा बच गया था, उसने राहत की साँस ली। पर तभी उसने पीछे देखा– डिलीवरी बॉक्स खुला पड़ा था और पिज्जा का पैकेट उससे निकल कर नाले में जा गिरा था।

'उफ्फ, आज की मजदूरी भर का नुकसान हो गया,' सुधांशु ने अपने सिर पर हाथ रखते हुए सोचा। फिर किसी तरह बाइक उठाकर रेस्तरां वापस पहुँचा। अंदर ठंडी हवा और भीनी–भीनी खुशबू थी, पर वहाँ खड़ा गोल चेहरे वाला मालिक बहुत क्रोध में था।

सुधांशु को देखते ही वह भड़क उठा, ''कहाँ मर गया था तू? अभी तक पिज्जा डिलीवर क्यों नहीं किया?''

''श्रीमान्! वो... पिज्जा गिर गया... नाले में।'' सुधांशु ने सधे स्वर में कहा।

''क्या बक रहा है तू? पूरा पैकेट नाले में गिरा दिया?'' मालिक क्रोध के मारे चीख पड़ा।

''श्रीमान्! अचानक एक बच्चा सामने आ गया था। मैंने उसकी जान बचाने का प्रयत्न किया तो मोटरसाइकिल फिसल गई और पिज्जा नाले में जा गिरा।'' सुधांशु ने बताया।

यह सुनकर मालिक की आँखें क्रोध से लाल हो गई और गर्दन की नसें तन गईं। वह सुधांशु का कॉलर पकड़ते हुए चीख पड़ा, ''अरे! तूने पिज्जा नाले में गिरा दिया। मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं।''

''श्रीमान्! आप नाराज मत होइए, जितना नुकसान हुआ है उसे मेरे वेतन से काट लीजिएगा...'' सुधांशु ने शांत स्वर में कहा।

''वेतन! नहीं, मैं तेरी बोटी–बोटी काट डालूँगा।'' मालिक गुस्से से सुधांशु के चेहरे पर तमाचा मारते हुए चीख पड़ा।

अपमान से सुधांशु की आँखें छलक आईं। अपने आँसुओं को पोंछते हुए उसने सिसकी भरी, ''श्रीमान्! मैंने ऐसा कौन–सा अपराध कर दिया जो आप इतना नाराज हो रहे हैं। मैंने तो बस उस बच्चे की जान बचाने का प्रयत्न किया था।''

''लेकिन अब तेरी नौकरी नहीं बचेगी। तेरे जैसे नालायकों के कारण से ही दुकान की इज्जत मिट्टी में मिलती है! निकल जा यहाँ से, और यदि कल से

दुकान के आस–पास भी दिखा, तो तेरी हड्डियाँ तोड़ दूँगा।'' मालिक सुधांशु को धक्का देते हुए दहाड़ा।

सुधांशु लड़खड़ा कर गिर पड़ा। दुकान के दूसरे कर्मचारी उसकी ओर देख रहे थे लेकिन डर के कारण कोई उसकी सहायता के लिए आगे नहीं बढ़ा। सुधांशु धीरे से उठा और सिर झुकाए हुए दुकान से बाहर निकल आया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसका दोष क्या है जिसके लिए मालिक ने उसे मारा?

घर पहुँचकर वह चुपचाप बिस्तर पर बैठ गया। उसके कपड़ों पर धूल थी और होंठ फटे हुए थे। तभी उसका छोटा भाई हिमांशु कमरे में आया। सुधांशु की हालत देख वह चौंक पड़ा, ''भैया! आपको क्या हुआ है?''

सुधांशु ने पूरी बात बता दी जिसे सुन हिमांशु का चेहरा गंभीर हो गया। कुछ सोचते हुए उसने कहा– ''केवल एक पिज्जा गिर गया था और मालिक ने मारपीट कर दी? ये बात कुछ अजीब नहीं लगती?''

सुधांशु ने पूरी बात बता दी जिसे सुन हिमांशु का चेहरा गंभीर हो गया। कुछ सोचते हुए उसने कहा– ''केवल एक पिज्जा गिर गया था और मालिक ने मारपीट कर दी? ये बात कुछ अजीब नहीं लगती?''

''लोग क्रोध में कभी–कभी हद पार कर जाते हैं।'' सुधांशु ने थकी आवाज में कहा।

''जब आप नुकसान भरने को तैयार थे तब उसके क्रोध का कोई कारण नहीं रह जाता। मुझे लगता है कि इसके पीछे अवश्य कोई कारण है।'' हिमांशु की आँखें सोच की मुद्रा में सिकुड़ गईं।

''कोई और कारण क्या हो सकता है?''

''यही तो पता लगाना है।'' हिमांशु ने मोबाइल उठाया और उसी रेस्तरां से एक पिज्जा ऑर्डर कर दिया। थोड़ी देर में एक डिलीवरी बॉय आया, पिज्जा दे गया।

हिमांशु ने डिब्बा खोल पिज्जा का एक टुकड़ा मुँह में रखा, पर अगले ही पल उसे थूकते हुए बोला– ''उफ्फ! ये तो बिलकुल बेस्वाद है। इतना घटिया पिज्जा भला कौन खाता होगा?''

''तुमको क्रोध में बेस्वाद लग रहा होगा, वरना कई ग्राहक तो राज यही पिज्जा मँगवाते हैं।'' सुधांशु ने कहा।

''रोज मँगवाते हैं?'' हिमांशु के माथे पर बल पड़े। कुछ सोचते हुए उसने कहा– ''नहीं भाई! कोई भी मानव इतना घटिया खाना रोज नहीं खा सकता? अवश्य इसमें कोई राज छुपा है।''

इतना कहते हुए उसने पिज्जा का एक टुकड़ा सुधांशु की ओर बढ़ाया। सुधांशु ने उसे मुँह में रखा तो उसका स्वाद भी कसैला हो गया। वह उसे बाहर निकालते हुए बोला– ''अरे! यह तो वास्तव में बिल्कुल बेस्वाद है। लेकिन मैं जिस ग्राहक के यहाँ पिज्जा लेकर जा रहा था, वह तो लगभग चार बजे रोज पिज्जा मँगवाता है। उसके अलावा कई ग्राहक और भी हैं जो प्रतिदिन एक निर्धारित समय पर ही पिज्जा मँगवाते हैं। समझ में नहीं आ रहा कि उन्हें रोज एक निश्चित समय पर ही पिज्जा की भूख क्यों लगती है?''

''लेकिन मैं थोड़ा–बहुत समझ गया हूँ। अब कल पता करेंगे कि असली खेल क्या है।'' हिमांशु ने कहा। उसके स्वर से लग रहा था कि वह कोई निर्णय कर चुका है।

अगले दिन दोनों भाई ४.०० बजे से थोड़ा पहले उस ग्राहक के घर के पास एक पेड़ की ओट में छुप कर खड़े हो गए। कुछ ही देर में उसी रेस्तरां का दूसरा डिलीवरी बॉय बाइक से आया। उसने दरवाजे पर लगी घंटी बजाई तो अंदर से दरवाजा खुला। वह पिज्जा देकर चला गया।

दोनों भाई धीरे–धीरे उस घर की एक खिड़की के पास पहुँचे और भीतर झाँकने लगे। अंदर चार–पाँच आदमी बैठे थे। एक आदमी ने पैकेट खोला, उसके अंदर से एक पिज्जा निकला... उसके साथ एक और छोटा सफेद पैकेट था।

''भाई! आज वाला माल अधिक बढ़िया लग रहा है।'' वह आदमी पैकेट को सूँघते हुए बोला।

''जल्दी बाहर निकालो। मूड बनाना है।'' दूसरे आदमी ने उतावलेपन से कहा।

उन लोगों ने पैकेट से सफेद पाउडर बाहर निकाला और उसे नाक से खींचना शुरू कर दिया।

हिमांशु फुसफुसाया, ''भैया! ये तो ड्रग्स है।''

''मतलब वह रेस्तरां मालिक पिज्जा के आड़ में नशे का कारोबार कर रहा है। तभी एक पिज्जा गिर जाने पर इतना लाल–पीला हो रहा था।'' सुधांशु के होंठ काँप उठे।

''हमें पुलिस को सूचना करनी चाहिए।'' हिमांशु ने कहा तो दोनों भाई सीधे पुलिस स्टेशन पहुँचे।

''बच्चो! तुम लोगों ने बहुत बड़ा काम किया है। हमें सूचना मिली थी कि इस शहर से नशे का कारोबार तेजी से फैल रहा है लेकिन हम लोग उसके नेटवर्क का पता नहीं लगा पा रहे थे। आज तुम्हारी सहायता से इस शहर से एक बड़ा अपराध समाप्त होगा।'' इंस्पेक्टर ने दोनों की पीठ थपथपाई और तुरंत अपनी टीम के साथ छापा मारने चल दिया।

पुलिस को उस घर से नशे की कई पुड़ियाँ बरामद हुईं। पकड़े गए लोगों के कबूल किया कि सारा सामान 'हॉट सिजल पिज्जा कॉर्नर' से आता है। पुलिस ने तुरन्त रेस्तरां पर छापा मारकर उसके मालिक को ड्रग्स के एक बड़े भंडार के साथ गिरफ्तार कर लिया।

अगले दिन अखबारों में खबर छपी थी 'दो बहादुर भाइयों ने खोला ड्रग्स गिरोह का राज'। इसी के साथ सुधांशु और हिमांशु की तस्वीर भी छपी थी।

पुलिस कप्तान ने एक भव्य समारोह में दोनों

भाइयों को सम्मानित किया। शहर के एक प्रतिष्ठित होटल मैनेजमेंट स्कूल ने सुधांशु को अपने यहाँ निःशुल्क प्रवेश देने की घोषणा की तो हिमांशु के विद्यालय ने भी उसका पूरा शुल्क क्षमा कर दिया था।

– लखनऊ
(उत्तर प्रदेश)

लघुकथा

चिन्मय और बरैया

– डॉ. यशोधरा भटनागर

''अरे! बरैया फिर कमरे में घुस आई। शायद आस–पास ही कहीं इन बरैयों ने घर बना लिया है। आज तो इसे मार ही देती हूँ।'' झाड़ू लेकर उसकी ओर बढ़ ही रही थी कि चिन्मय रोते हुए बोला–

''माँ कृपया उसे मत मारिए।''

''बेटा! कुछ दिन पहले ही तो ऐसी ही घूमती बरैया ने तुम्हें कितनी जोर से काटा था। दर्द से बेहाल हो कैसे रोए थे तुम! तुम्हारा पूरा हाथ सूज गया था। दो दिन बाद ठीक हुआ था तुम्हारा हाथ।''

''तो क्या हुआ माँ? अब देखिए मेरा हाथ।'' और झट अपना बायां हाथ मेरे सामने फैला दिया।

''ठीक हो गया न!'' उसकी नन्हीं आँखें चमक रही थीं।

''पर बेटा! यह तुम्हें फिर से काट सकती है।''

''माँ! इसके बच्चों ने उसे कुछ लेने के लिए भेजा होगा न। वो भी इसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, जैसे मैं शाम को खिड़की से झाँकता रहता हूँ, पिताजी को लौटने में देर हो जाती है तो मैं परेशान हो जाता हूँ। और आप उस बरैया को मार देंगी तो उसके बच्चे कितना रोएँगे।'' चिन्मय का गला भर आया, आँखें डबडबाने लगीं।

''ठीक है बेटा! आप बिल्कुल परेशान मत हो। मैं बस उसे हमारे घर से बहार निकाल देती हूँ।''

कमरे के बाहर खड़े, चुपचाप सब कुछ देख–सुन रहे पिताजी ने आगे बढ़कर अपने नन्हे बेटे को गोद में उठा लिया।

''चिन्मय! तुम बहुत अच्छे बच्चे हो! मुझे तुम पर गर्व है। मेरा प्यारा बेटा।''

और बड़े प्यार से चिन्मय के गालों पर बहते आँसुओं को अपनी हथेली में समेट लिया। चिन्मय भी पिताजी से कसकर चिपट गया।

– देवास (म. प्र.)

तुम शुरू तो करो

– कविता राय

मुख्य सड़क के चौड़ा होने के बाद से सभी बहुत परेशान हो गए थे। रास्ते को बड़ा करने के लिए किनारे लगे पेड़ों को काट दिया गया था। इससे सड़क तो चौड़ी हो गई थी पर अब लोगों को जो छाँव और शुद्ध हवा मिलती थी उसकी जगह तेज धूप और धूल–मिट्टी झेलनी पड़ रही थी। गर्मी के दिनों में तो हालत और भी खराब हो जाती थी। आते–जाते लोग सरकार और अफसरों को भला–बुरा कह रहे थे।

नंदू भी रोज उसी सड़क से स्कूल आता–जाता था। उसे सड़क के दोनों तरफ लगे पेड़ बहुत अच्छे लगते थे और वो भी उनके कटने से बहुत परेशान और दुखी था। वो रोज इस समस्या का उपाय सोचता पर उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। एक दिन वो इस समस्या के समाधान पर सोच–विचार करता घर पहुँचा।

सामने दादाजी बैठे थे, उन्होंने नंदू को परेशान देखकर पूछा– ''बेटा! क्या सोच रहे हो ?''

''दादाजी! मैं सोच रहा हूँ कि बड़ी सड़क के किनारे जो पेड़ कट गए हैं, उनके लिए हम क्या कर सकते हैं ?''

''बस इतनी–सी बात! ये तो कोई मुश्किल नहीं है। तुम पुराने पेड़ों की जगह नए पौधे लगा दो, कुछ वर्षों में वो बड़े होकर पेड़ बन जाएँगे।'' दादाजी ने हँसते हुए कहा।

''ये तो ठीक है पर....।'' इतना कहकर नंदू फिर सोच में पड़ गया।

''तो फिर क्या सोच रहे हो। क्या मेरी बात ठीक नहीं लगी ?''

''आपकी बात तो ठीक है, पर मैं अकेला इतने पौधे कैसे लगा पाऊँगा ?'' उसने सिर झुकाते हुए कहा।

''अरे! बच्चे, तुम शुरु तो करो, फिर देखना।'' दादाजी की आवाज में स्नेह भरा आश्वासन था।

दादाजी की बात सुनकर नंदू मुस्कुरा दिया। अगले दिन रविवार था, शाला की छुट्टी थी, तो उसने दादाजी की सलाह पर काम करने की सोची। वो रोज से थोड़ा जल्दी उठ गया और दादाजी के साथ जाकर नर्सरी से पौधे ले आया। उसने एक बड़ा थैला लिया और उसमें पौधे, एक खुरपी और पानी की दो–तीन बड़ी बोतलें भी रख लीं। दादाजी और नंदू पौधे और बाकी सामान लेकर सुबह–सुबह ही मुख्य सड़क के किनारे पहुँच गए और पौधे लगाने में जुट गए। वो खुरपी से थोड़ी मिट्टी खोदकर लाया हुआ पौधा वहाँ लगाते और फिर बोतल में से उस पौधे को पानी देते।

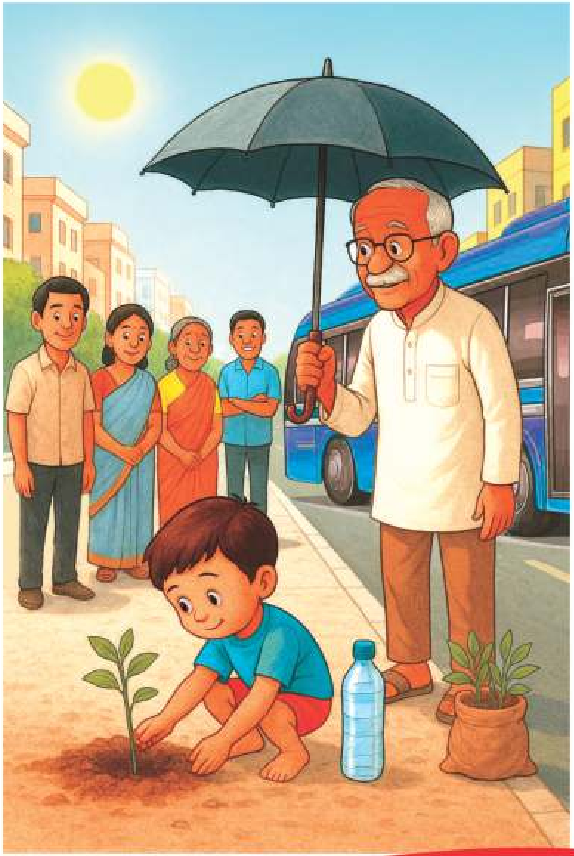

ये करते हुए उन दोनों को दोपहर हो गई। उन्हें इस तरह पौधे लगाते देखकर, उस सड़क से आने-जाने वाले लोग भी उनके आसपास जुटने लगे। फिर उन्हीं लोगों में से कुछ लोग नर्सरी जाकर और पौधे ले आए, कुछ लोगों ने पौधों के लिए पानी की व्यवस्था की और कुछ पौधों के लिए गड्ढे खोदने तैयार करने लगे। इस तरह शाम होते तक सड़क के एक किनारे पर पौधे लग चुके थे और लोगों द्वारा स्वयं वृक्षारोपण का समाचार सरकार तक भी पहुँच चुका था।

अगले दिन सुबह जब लोग सड़क के दूसरे किनारे पर पौधे लगाने पहुँचे तो सड़क अधिकारी वहाँ पहले ही से आए हुए थे और पौधा रोपण का काम शुरू हो चुका था।

सभी लोगों को इकट्ठा देखकर अधिकारी ने नंदू, दादाजी और बाकी लोगों को धन्यवाद करते हुए आश्वस्त किया कि बाकी पेड़ों को लगाने और देखभाल करने के लिए उन लोगों को परेशान नहीं होना पड़ेगा। इस सबकी व्यवस्था मैं और मेरा विभाग करेंगे।

यह सुनकर लोगों ने तालियाँ बजाकर उनका धन्यवाद किया। नंदू भी ये सुनकर बहुत खुश था और खुशी से तालियाँ बजा रहा था। उसके मन में दादाजी के शब्द गूँज रहे थे, तुम शुरु तो करो।

– नई दिल्ली

प्रसंग–सुभाषचन्द्र बसु जयंती : २३ जनवरी

परोपकारी सुभाष

– मोहन उपाध्याय

नेताजी सुभाषचंद्र बसु के नाम से भारत का बच्चा-बच्चा परिचित है क्योंकि भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में उन्होंने इतना योगदान दिया कि वे भारत के इतिहास में अमर हो गए हैं।

ऐसे महान नेताजी के विद्यार्थी-जीवन की यह घटना है। सुभाष प्रति दिन कुछ समय के लिए घर से चुपचाप निकल जाते और आ जाते। उनकी माँ इस बात को कुछ दिनों तक देखती रही। फिर एक दिन सुभाष से पूछा– ''बेटा! तुम प्रतिदिन थोड़े समय के लिए बिना मुझे बताएँ कहाँ चले जाते हो?'' सुभाष थोड़ी देर चुप रहे। माँ ने फिर कहा– ''तुम बताते क्यों नहीं कि तुम कहाँ जाते हो?'' तब सुभाष बड़ी नम्रतापूर्वक बोले– ''माँ! मैं एक गरीब विद्यार्थी को जानता हूँ जो पढ़ाई में कमजोर है। इसलिए मैं अपनी इच्छा से उसे पढ़ाने जाता हूँ ताकि वह एक अच्छा विद्यार्थी बनकर अपनी उन्नति कर सके।''

– अजमेर (राजस्थान)

स्मृतिरूप श्री. कृष्णकुमार जी अष्ठाना

– गोपाल माहेश्वरी

एक वर्ष बीत गया भाईसाहब को गए हुए। केवल उनकी स्मृतियों के सहारे बीत गए बारह महिने लेकिन स्मरण नहीं कि बीता हो एक भी दिन जब उनकी याद न आई हो। चाहे किसी दिन कार्यालय का कार्यदिवस हो या अवकाश या प्रवास किसी न किसी बात पर वे याद आते ही हैं। २० वर्ष से उनके सान्निध्य में 'देवपुत्र' की सेवा चलती रही। कोई भय नहीं, संकोच नहीं, दुविधा नहीं क्योंकि ये भाव मन में आते तो तत्काल ही समाधान के कल्पवृक्ष की भाँति श्री. अष्ठाना जी का वरदहस्त हम पर छा जाता।

'देवपुत्र' उनके लिए आजीविका या प्रतिष्ठा दोनों ही न था बल्कि वे संगठन के आदेश से 'देवपुत्र' को एक शिल्पी की भाँति गढ़ने वाले विलक्षण साधक थे। व्यवस्था से लेकर संपादन तक प्रत्येक पक्ष उनकी व्यक्तिगत चिंता और चिंतन से जुड़ा होता था। कार्यालय की छत और दीवारों से मकड़ी के जाले निकालना हो या बालसाहित्य जगत के कतिपय मस्तिष्कों के वैचारिक जाले उनकी सतर्क दृष्टि स्वच्छता की अभ्यासी थी। 'देवपुत्र' का प्रकाशन उनके लिए एक परमसात्विक अनुष्ठान था और उनका साथ यानी कार्यकर्ता निर्माण की चलती फिरती कार्यशाला।

उनके शिल्पित अनेक कार्यकर्ता आज समाज में उच्चपदासीन होकर कर्त्तृत्व का आदर्श गढ़ रहे हैं। वे स्वयं कभी पुरस्कारों और सम्मानों के पीछे नहीं भागे वस्तुत: वे अपने लिए 'देवपुत्र' निकालते ही नहीं थे। 'देवपुत्र' का प्रकाशन उनका मिशन था। लेकिन अनेकानेक संस्थाओं और संगठनों से उन्हें श्रद्धापूर्वक इतने सम्मान मिले कि उनके घर की सारी दीवारें मानपत्रों से पट गईं। उन सबके बीच भी वे कमलवत निर्लेप एक संन्यासी की भाँति रहते थे।

किसी भी साधारण से साधारण कार्यकर्ता से भेंट करके उन्हें जो हार्दिक आनंद होता था उसे वे कभी बड़ा से बड़ा सम्मान प्राप्त करते हुए भी अनुभव करते नहीं दिखे।

सामान्यत: किसी बड़े और आत्मीय जन के चले जाने पर उसके निधन को अपूरणीय क्षति कह दिया जाता है लेकिन मैंने भाईसाहब से बिछुड़कर अनुभव किया है कि ऐसी क्षति की अपूरणीयता क्या होती है? मेरा कोई दंभ नहीं कि यह मैंने ही अनुभव किया मुझ जैसे ही नहीं मुझसे भी अधिक यह अनुभूति करने वाले अनेक लोग होंगे पर क्या करूँ यहाँ तो केवल अपनी अनुभूति ही व्यक्त कर सकता हूँ।

उनकी सीखें, आदर्श और सूक्ष्म उपस्थिति वो आजीवन साथ रहेगी पर प्रत्यक्षत: मस्तक पर वह छाया अब नहीं रही, इस पीड़ा को बिरले लोग ही समझ सकेंगे। सादर प्रणाम उस महान पुरुष को।

साथ लेकर चल रहे थे यों अचानक खो गए हो।
थे सदा सबको जगाते अब कहाँ यों सो गए हो?
साथ थे सदेह तब तक, द्वैत था भौतिक जगत में,
हो गए विदेह अब बस प्रेरणा तुम हो गए हो।।
नमन तुमको हे महात्मन्! नमन है मानस भुवन में।
अदृश्य हो स्मृति रूप है संजीवनी अब भी छुवन में।
पंथ जो तुमने दिखाया और चलना भी सिखाया,
चल सकें उस पर अडिग वह शक्ति दें मानससुवन में।।

शब्द चाहे मेरे हो यह भाव पूरे 'देवपुत्र' परिवार का ही क्योंकि वे थे ही ऐसे कि सबको अपने लिए अनन्य आत्मीय लगते थे।

– इन्दौर (म. प्र.)

अभिनंदन : लक्ष्य की अचूक साधिका कु. हर्षिता दवे

कु. हर्षिता दवे, उस दवे परिवार की बेटी है जिसकी तीन–तीन पीढ़ियाँ केवल ज्ञान साधना में ही लगी हैं। मात्र २२ वर्ष की किशोरावस्था में मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग परीक्षा से अनारक्षित वर्ग में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा सिद्ध प्राप्त कर डिप्टी कलेक्टर बन जाने की उपलब्धि वास्तव में बहुत विशेष है।

कुमारी हर्षिता 'देवपुत्र' के डॉ. विकास दवे की होनहार सुपुत्री है कु. हर्षिता ने अपनी आरंभिक शिक्षा विद्याभारती के सरस्वती शिशु मंदिर माणिकबाग इन्दौर म. प्र. से हिन्दी माध्यम से प्राप्त की और आज इतनी चुनौती पूर्ण प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में सफल होकर सिद्ध कर दिया कि हिन्दी माध्यम में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर भी उच्च प्रशासनिक पदवियों के लिए योग्यता प्राप्त की जा सकती हैं।

बाद में वे माधव विद्यापीठ में भी शिक्षित हुईं। वे बचपन से ही एक होनहार वक्ता, विलक्षण मेधावी और बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। आपके दादाजी स्व. जीवनलाल जी दवे प्रकांड पंडित और मूर्धन्य विद्वान थे। कु. हर्षिता के पिता डॉ. विकास दवे वर्षों 'देवपुत्र' पत्रिका को प्रबंध संपादक व संपादक के रूप में सब प्रकार से प्रतिष्ठित करते रहे और अब मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी में अभूतपूर्व–यशस्वी निदेशक के साथ ही भारतीय बाल–साहित्य के शोधकर्ताओं को मार्गदर्शन दे रहे हैं।

वे एक वैश्विक श्रेणी के बाल–साहित्य विशेषज्ञ हैं। कु. हर्षिता के बड़े भाई श्री. हार्दिक दवे भी विलक्षण प्रतिभावान हैं। वे अनेक राष्ट्रीय मंचों पर अपना लोहा मनवाकर वर्तमान में एक राष्ट्रीय स्तर के दृश्य समाचार संचार संस्थान, (न्यूज चैनल) में सेवाएँ दे रहे हैं। आपकी दादीजी एक सद्गृहस्थ गृहिणी और माताजी जो कि सुयोग्य हिन्दी अध्यापिका हैं। सुदृढ़ संस्कार परंपरा से सिंचित यह परिवार अनेक लोगों के लिए एक प्रेरक और आदर्श है।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या, प्रबंध न्यासी सीए. राकेश भावसार, कोषाध्यक्ष श्री. मोहनलाल जी गुप्ता एवं समस्त न्यासियों सहित संपादक गोपाल माहेश्वरी, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान एवं देवपुत्र परिवार कुमारी हर्षिता को इस विशिष्ट उपलब्धि पर गौरवानुभूति करते हुए हार्दिक बधाई देते हैं। हमारी शुभकामना है कि कु. हर्षिता अपनी योग्यता से असंख्य किशोरियों की प्रेरणाबन कर भारत माता की उत्कृष्ट सेवा हेतु जीवन अर्पित करें।

पंखों के मेहमान

– अनिल पुरोहित

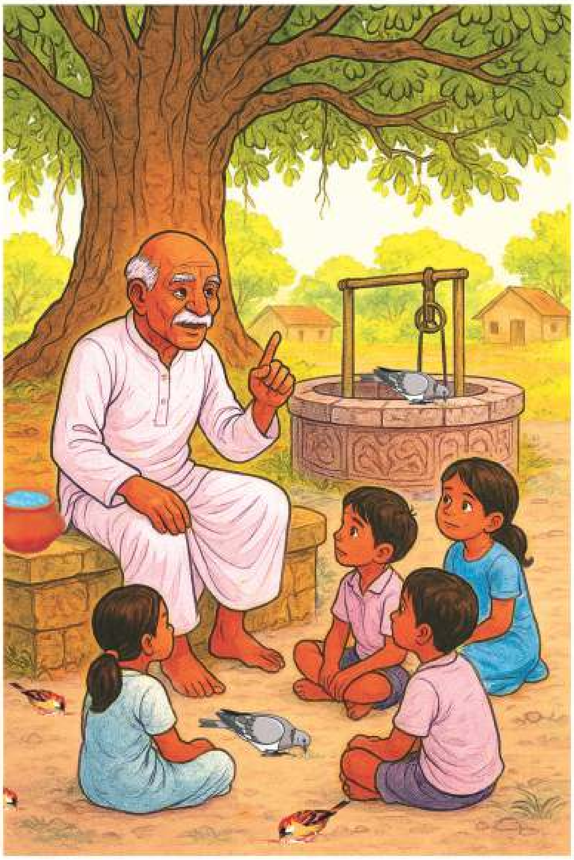

गाँव के बाहर एक बड़ा–सा पीपल का पेड़ था। जिसके नीचे एक पुराना कुआँ था। कुएँ का पानी सूख चुका था, लेकिन उसकी दीवारों पर अभी भी पुराने जमाने की नक्काशियाँ चमकती थीं। उस पेड़ के नीचे अक्सर बूढ़े रामस्वरूप बैठा करते थे। उनके हाथ में एक छोटी–सी मटकी और कुछ दाने होते थे। गाँव के बच्चे उन्हें ''दादाजी'' कहकर पुकारते थे और उनके पास बैठकर कहानियाँ सुना करते थे।

रामस्वरूप दादा जी हर सुबह अपने घर से बाजरा, चावल और पानी की मटकी लेकर उस पीपल के नीचे आते थे। जैसे ही वे दाना डालते, आसपास के पेड़ों पर बैठी गौरैया, कबूतर, तोते और बुलबुल चहचहाने लगते और नीचे आकर दाना चुगना प्रारंभ कर देते। दादा जी मुस्कुराते हुए उन्हें देखते रहते।

गाँव के बच्चे यह देखकर हैरान होते थे। एक दिन १० वर्ष का गोपाल उनके पास आकर बोला– ''दादाजी! आप हर दिन इन पक्षियों को दाना क्यों खिलाते हैं?''

रामस्वरूप ने गोपाल को पास बिठाया और बोले– ''बेटा! ये भी भगवान के जीव हैं। ये बोल नहीं सकते, लेकिन इन्हें भी भूख और प्यास लगती है। इंसान तो अपने लिए खाना–पानी जुटा लेता है, पर ये बेचारे तो हमारी सहायता पर निर्भर रहते हैं।''

गोपाल ने सिर हिलाया, लेकिन उसके मन में एक प्रश्न था। उसने पूछा– ''यदि हम न दें, तो ये जंगलों में जाकर खाना ढूँढ सकते हैं न?''

दादा जी मुस्कुराए और बोले– ''पहले जंगल थे, नदियाँ थीं, तालाब थे। अब इंसान ने पेड़ काट दिए, पानी के स्रोत सुखा दिए। अब इन्हें शहरों और गांवों में आसरा ढूँढना पड़ता है। अगर हम इनका ध्यान नहीं रखेंगे, तो ये मर जाएँगे।''

दादाजी की बातें गोपाल के मन में घर कर गईं। अगले दिन वह अपने घर से मुट्ठी भर दाने और एक कटोरी पानी लेकर आया। उसने उन्हें पीपल के पास रखा। धीरे–धीरे अन्य बच्चे भी यही करने लगे। हर सुबह वहाँ एक छोटी सभा लगने लगी– बच्चे दाने और पानी लाते, पक्षियों को देखते और रामस्वरूप दादाजी से कहानियाँ सुनते।

समय बीतता गया। रामस्वरूप बूढ़े हो गए और अधिक चल–फिर नहीं पाते थे। अब उनके स्थान गोपाल और उसके मित्र पक्षियों की देखभाल करने लगे। गाँव में यह एक परंपरा बन गई थी।

एक दिन जब गाँव में भीषण गर्मी पड़ी, तो आस पास के तालाब सूख गए। पक्षी थके–माँदे पेड़ों पर आकर बैठने लगे। बच्चों ने तुरंत गाँव के हर पेड़ के

नीचे मिट्टी के बर्तन रखे और उनमें पानी भर दिया। पक्षियों की चहचहाहट से पूरा गाँव गूँज उठा। लोग दूर–दूर से देखने आने लगे कि कैसे बच्चों ने पूरे गाँव में पक्षियों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था की है।

गाँव के मुखिया ने एक सभा बुलाई और बच्चों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा– ''यह केवल पक्षियों के लिए नहीं, हमारी इंसानियत के लिए भी एक मिसाल है। जब हम छोटे जीवों की देखभाल करते हैं, तो प्रकृति हमारी देखभाल करती है।''

रामस्वरूप दादाजी की आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने गोपाल को गले लगाते हुए कहा– ''मैंने जो बीज बोया था, तुम सबने उसे एक सुंदर पेड़ बना दिया। यही सच्ची सेवा है।''

आज वह गाँव– ''पक्षियों का घरौंदा'' कहलाता है, जहाँ हर पेड़ के नीचे पानी और दाने रखे जाते हैं। यह कहानी हमें सिखाती है कि छोटे–छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। हमें प्रकृति और जीवों की देखभाल करनी चाहिए, ताकि हमारी धरती हमेशा हरी–भरी और जीवंत बनी रहे।

– सुजानगढ़ (राजस्थान)

बौद्धिक व्यायाम

– देवांशु वत्स

आज घर पर भोजन के समय पिताजी ने बुआ से अधिक रसगुल्ले खाए। बुआ ने माँ से अधिक रसगुल्ले खाए। पिताजी ने मामाजी से कम रसगुल्ले खाए। मयंक ने पिताजी से कम और बुआ से अधिक रसगुल्ले खाए। सबसे अधिक रसगुल्ले किसने खाए?

उत्तर – सबसे अधिक रसगुल्ले मामाजी ने खाए।

स्वयं में पाठशाला 'देवपुत्र' के शिक्षक दिवस विशेषांक निश्चित ही शिक्षा प्रधान होना है। देखिए, आरंभ में ही बड़े भैया ने हिंदी देवनागरी लिपि लेखन के संबंध में कितने अच्छे से समझाया। कहानी शिक्षक दिवस, सच है शिक्षक के अध्यापन से अधिक उनका व्यक्तित्व बच्चों को सिखाता है। श्वास का महत्व बताती कहानी जादुई काँच, शिवानी जी की कहानी बुद्धिमान बकरी बच्चों को मनोरंजन के साथ ज्ञान भी देती है। यूज़ एंड थ्रो की संस्कृति हमारी नहीं पुरानी वस्तु के प्रति हमें उपेक्षा भाव नहीं रखना चाहिए। शिक्षा देती कहानी पुराना बस्ता। हमें आने वाले समय के लिए तैयार रहना चाहिए, मेहनत हुई सफल। हिलमिल के रहते बच्चे कितने प्यारे लग रहे हैं। हम साथ–साथ हैं।

पर्यावरण आधारित कहानी ओजोन हमें बचाना है, बच्चों को पर्यावरण के प्रति सचेत करती है। तो सात चकुली चौदह चै, कहानी अन्य भाषाओं तथा वहाँ के लोक जीवन, लोक संस्कृति से बच्चों को अवगत कराती है।

कविता में चिड़िया बन उड़ती, हिंदी हमारी शान, बंदर की परेशानी, पहेलियाँ आदि विभिन्न विधाओं से सुसज्जित हमारे गोपाल भाई जी के श्रम को सार्थक करता अंक।

– डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल (म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक 'देवपुत्र' का अक्टूबर २०२५ अंक भी आपकी सारस्वत परंपरा के संग हर्ष, गर्व एवं प्रसन्नता का प्रसंग है। यथा नाम तथा गुण की नीक व सटीक पत्रिका के लिए संपादन की भूमि जैसी भूमिका में यह सत्य उजास की तरह उजागर होता है कि यश से बड़ा कोई इत्र नहीं है और पवित्र चरित्र से बढ़कर कोई मित्र नहीं है। व्यक्तित्व की परख कृतित्व से ही होती है।

राक्षसराज महा प्रतापी रावण अपने शक्तिपुंज गुणों के रहते हुए भी केवल अहंकार के एक विकार के दुष्परिणाम से सुपत्र होने के बदले कुपात्र कहलाता है। किसी भी पर्व का अर्थ जाने बिना उसे मनाना व्यर्थ है।

रावण के सगे भाई विभीषण ने उसका विरोध किया था तो उधर श्रीराम के भाई लक्ष्मण ने बड़े भाई का जी–जान से साथ दिया था। बड़े भ्राता के बैरी हो जाने से रामभक्त विभीषण का नाम किसी भी बच्चे का नहीं रखा जाता है। संपादकीय श्रृंखला की यह कड़ी भी बड़ी प्रेरणात्मक है कि विचार ही आचार का आधार है।

होनहार बाल भगवान के रूप कहे गए बचपन को नैतिकता के साँचे, साँचे और ढाँचे में ढालने से परिवार से लेकर देश तक का निरंतर कल्याण है। नीक आचरण के लिए प्रेरणा की दृष्टि से रावण सटीक उदाहरण स्पष्ट है। कई विद्यालयों के प्रवेश–द्वार पर बड़े अक्षरों से यह अंकित है– 'शिक्षार्थ आएँ: सेवार्थ जाएँ।''

चारित्रिक गुणवत्ता की महत्ता के संदर्भ में रचनाकार से अधिक रचना को प्राथमिकता देने की आपकी मानसिकता बीमार के लिए अनार की कहावत को चरितार्थ करती है।

आपने बिंदु में भी सिंधु का आभास कराने की अभिव्यक्ति के संग अपने शास्त्र द्वारा कहे गए गुरुमंत्र 'शीलं सर्वत्र वै धनम्' को उद्धृत किया है। इसके सत्य को सभी ने माना है कि चरित्र ही समस्त गुणों का

खजाना है। स्वयं के साथ परिवार और समाज हितार्थ सुलक्षण, बचपन में ही अंकुरित होकर पल्लवित से फलित होने तक आजीवन सुख देंगे।

रावण जल गया (डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा') दुर्गावती रण में निकलीं (प्रभुदयाल श्रीवास्तव) दीवाली से जुड़ी कथाएँ (राजेश गुजर) दृढ़ निश्चय (उमेश कुमार चौरसिया) हम सकारात्मक परिवर्तनों के भगीरथ (नारायण चौहान) और बाँहों में आकाश (हिन्दी अनुवादः पद्मा चौगाँवकर) की रचनाओं की सृष्टि प्रासंगिकता की दृष्टि से सराहनीय है।

इसके साथ ही नरेन्द्र देवांगन, डॉ. मनोहर भंडारी, सनत, रजनीकांत शुक्ल, डॉ. शील कौशिक, डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी एवं सुशील भी प्रशंसा के सुपात्र हैं। इंद्रधनुषी फेम में सुंदर चित्र जैसी कविताओं के लिए पंकज मित्र 'अटल' तथा घमंडीलाल अग्रवाल भी प्रशंस्य है। डॉ. नागेश पांडेय के सीरियल श्रेष्ठ रहते हैं।

संपादन के दूध से बनी क्रीम की तरह आपकी टीम को भी बधाई की मिठाई सहित ढेर सारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

– राजा चौरसिया, कटनी (म. प्र.)

राष्ट्राय मम जीवनम्

राष्ट्रसेवा सुकर्तव्या राष्ट्राय मम जीवनम्।
मनसि यादृशं भावं कर्मेण तादृशी कृतिः।।

हे कर्त्तव्य राष्ट्र सेवा ही, राष्ट्र हेतु जीवन मेरा।
राष्ट्रहितैषी कर्म सभी हो, मन में मेरे भाव उजेरा।।

स्वधर्मः राष्ट्रधर्मस्यात् हृदयं राष्ट्र मंदिरम्।
देवैक राष्ट्रदेवो हि राष्ट्रसेवा हि मद्व्रतम्।

जीवन धर्म राष्ट्र ही मेरा, हृदय राष्ट्र का मंदिर है।
राष्ट्रदेव ही परम देवता, सेवा का व्रत सुंदर है।।

ग्रंथ परिचय

संघ के अनुष्ठान में अष्ठाना

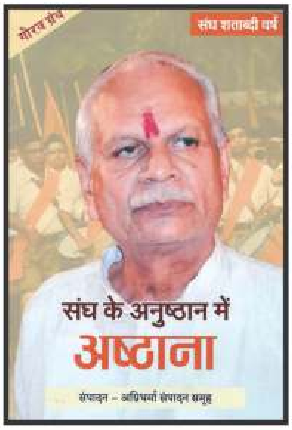

श्री. आशीष जैन और श्रीमती शोभा जैन ने दो वर्षों की अनथक साधना के बाद श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना पर इस बहुमूल्य ग्रंथ का संपादन किया है। वस्तुतः इस ग्रंथ की यात्रा श्री. अष्ठाना जी की दुर्लभ अनुमति से उनके जीवनकाल में ही एक अभिनंदन ग्रंथ के रूप में आरंभ हुई थी दुर्देव से वे इसे लेकर संभवतः इतने निश्चिंत हो चुके थे कि बीच में ही १४ जनवरी २०२५ को चिरनिद्रा में चले गए। इस अभिनंदन ग्रंथ के, श्रद्धांजलि स्वरूप गौरव ग्रंथ में परिणति के साथ श्री. अष्ठाना जी से बिछोह की असहनीय वेदना जुड़ी है।

ग्रंथ में सात सोपान हैं। जिन्हें (१) श्री. अष्ठाना का जीवन वृत्त, (२) प्रशिक्षण प्रवास, प्रबोधन और प्रसंग, (३) पत्रकारिता के प्रखर पुरुष, (४) सर्जना के आयाम, (५) प्रसंगों में जीवन संस्मरण, (६) साक्षात्कार और (७) अंतिम विदाई में ठिठुरी सुबह नाम दिए हैं। लगभग २५० पृष्ठ में संपादक समूह ने उस विराट व्यक्तित्व को शब्द बंधन में बांधने का अशक्य प्रयास किया है। रुद्रादित्य प्रकाशन प्रयागराज से प्रकाशित इस अमूल्य ग्रंथ का मूल्य ६७५/– निश्चित किया है। संपादक समूह को हार्दिक साधुवाद। 'देवपुत्र' परिवार आपका कृतज्ञ है श्री. अष्ठाना का यह शब्दविग्रह तैयार करने के लिए।

पुस्तक परिचय

श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' बाल साहित्य और प्रौढ़साहित्य में समान रूप से लेखनी चलाने वाले सुविख्यात लेखकों की श्रेणी में सम्मान्य नाम है। वे सजल विधा निपुण और बालवाटिका के संपादन कर्म से जुड़ी समर्थ समीक्षक भी हैं। यहाँ प्रस्तुत है उनकी बालसाहित्य की कुछ पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय।

श्रीमती रेखा लोढ़ा की बोधि प्रकाशन सी-४६ सुदर्शन पुरा इण्डस्ट्रियल एरिया एफ. नाला रोड, २२ गोदाम जयपुर ०६ से प्रकाशित तीन कृतियाँ।

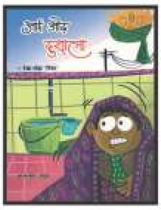

आई ओढ़ दुशाला

मूल्य- १००/-

यह रेखाजी की २१ मनभावन चहचहाती बाल कविताओं का सचित्र संकलन है जिनकी सहज, सरल, सरस अभिव्यक्ति बालमन को रससिक्त करने में सक्षम है।

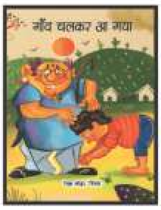

गाँव चलकर आ गया

मूल्य- १००/-

रेखा लोढ़ा जी की ग्यारह बाल कहानियाँ इस संकलन में है ये सभी उद्देश्यमूलक, सुरुचि व सुबोधता से परिपूर्ण कहानियाँ हैं।

आओ मिलकर भीगें गाएँ

मूल्य- १२०/-

सुंदर रेखाचित्रों से सज्जित २९ ऐसे बाल गीत जो बाल पाठकों को सीधे प्रकृति माता की गोद में होने जैसी भाव-अनुभूति जगाती है। बचपन का उमंग प्रकृति माता के संग इन बाल गीतों का केन्द्रीय भाव है।

चुन्नू-मुन्नू थे दो भाई

मूल्य- ४०/-

२१ मनमोहक बालगीतों का यह बहुरंगी भावोंभरा गुलदस्ता है इसमें बचपन की सौंधी सुवास है तो उमंगों के चटख रंग।

प्रकाशन- सुधा प्रकाशन, २०७ एलआयजी बर्रा-०५, कानपुर नगर (उत्तर प्रदेश)

अक्ल बड़ी या भैंस

मूल्य- २२०/-

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' बच्चों की प्रिय लेखिकाओं में गणनीय एक हस्ताक्षर है। आपने बच्चों के लिए कई उत्तम रचनाएँ लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक आपकी प्रतिनिधि बाल कहानियों का संग्रह है वे कहानियाँ जो बहुत कहानियों का संग्रह है वे कहानियाँ जो बहुप्रशंसित हुई।

प्रकाशक- शब्द साहित्य प्रकाशन कोटा- डॉ. सी. वी. रमन युनिवर्सिटी के पास, चण्डीगढ़ (यू. टी.)

कविता – बसंत पंचमी : २३ जनवरी

वीणा वादिनि माँ

– भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

मेरी वाणी को मधु स्वर दो
वीणावादिनि माँ!
मेरी मति को उज्ज्वल कर दो
वीणावादिनि माँ!!

काट जटिल जड़ता का बंधन,
कर दो जीवन–वन को नन्दन,
हृदय–सिन्धु को रस से भर दो
वीणावादिनि माँ!

सदा सुपथ पर पद हों गतिमय,
रहूँ लोक में निशिदिन निर्भय,
मेरे सिर पर निज कर घर दो
वीणावादिनि माँ!

सत्य–धर्म–व्रत में हो तत्पर,
मानवता–हित करूँ निरन्तर,
पुण्य प्रेम का भास्वर वर दो
वीणावादिनि माँ!

मेरी मति को उज्ज्वल कर दो
वीणावादिनि माँ!!

– उन्नाव (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१२/२०२५ प्रेषण तिथि ३०/१२/२०२५ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

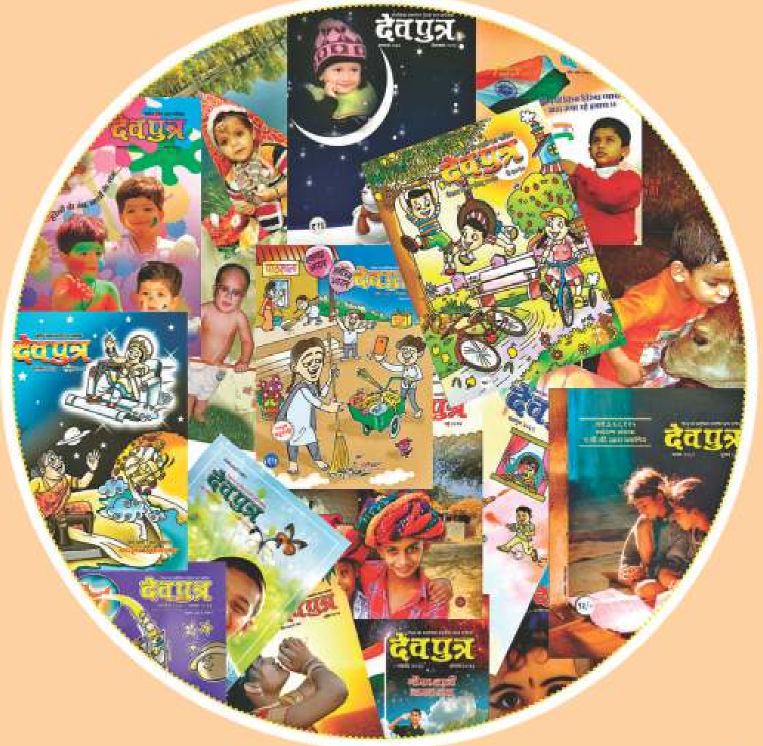

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी